प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट
दिल्ली-६

अनुवादक
माईदयाल जैन

प्रथम सस्करण
नवम्बर, १९५६

मूल्य
दो रुपया

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफरिन पुल
दिल्ली

रेत और झाग

मान्यताए

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट
दिल्ली-६.

अनुवादक
माईदयाल जैन

प्रथम सस्करण
नवम्बर, १९५६

मूल्य
दो रुपया

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफरिन पुल
दिल्ली

रेत और झाग

मान्यताए

इस पुस्तक की कहानी

खलील जिब्रान हिन्दी-जगत के लिए कोई अपरिचित विचारक, कवि और मनीषी नहीं हैं, उनकी कई पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। फिर भी उनके जीवन का संक्षिप्त परिचय अलग दे दिया गया है। इस भूमिका में प्रस्तुत पुस्तक 'रेत और झाग' के रचे जाने की रोचक कहानी और समालोचकों की दृष्टि में इस पुस्तक का महत्त्व दिया जा रहा है, जो बिल्कुल नई बात है।

खलील जिब्रान की सैक्रेटरी श्रीमती बारबैरा यंग ने एक बार कवि से उनकी जीवनी या उनके प्रति श्रद्धांजलि लिखने की आज्ञा मांगी। जिब्रान ने आज्ञा देते हुए कहा, "यदि मैं आज रात को मर जाऊं, तो यह बात याद रखना ···।" कवि को कोई कहानी या कुछ बात कहने से पहले भूमिका-रूप में एक-दो वाक्य सूत्र या सूक्ति के ढंग से कहने की आदत थी। और वे सूक्तियां, सुभाषित या कहावतें कागज के टुकड़ों, थियेटरों के कार्यक्रम के कागजों, सिगरेट की डिब्बियों के गत्तों, तथा फटे हुए लिफाफों पर लिखी हुई होती थीं, जिन्हें श्रीमती बारबैरा यंग इकट्ठी करने लगीं। और तब कवि उससे कहते, "अच्छा, तुम अपने काम में लगी हो, रेत और झाग को मूर्खता से इकट्ठा कर रही हो?" जिब्रान कभी-कभी अपनी सैक्रेटरी के द्वारा इन परचियों को इकट्ठा करने के काम का मजाक करते हुए कहा करते थे, "ये तो केवल रेत और झाग ही होंगे।" इस सूक्ति-संग्रह का यही नाम रखा गया। और तब से ही जिब्रान

ने इस सग्रह की तैयारी मे दिलचस्पी लेनी आरम्भ कर दी। वह इस काम में खूब आनन्द लेने लगे और फिर नई-नई कहावतें बनाने लगे। इनमें से कुछ सूक्तिया जिब्रान की पहले कही या लिखी हुई प्रभावशाली सूक्तियों की टक्कर की हैं। एक दिन जिब्रान ने कहा, "कृपा करके यह लिखिए— और याद रखिए कि यह पुस्तक की अन्तिम कहावत होनी चाहिए— जिन विचारों को मैंने इन सूक्तियो मे वन्द किया है, मुझे अपने कामों द्वारा उनको स्वतन्त्र करना है।" 'रेत और झाग' की यही अन्तिम सूक्ति है, और इससे प्रकट होता है कि कवि अपनी कथनी को करनी में लाने के कितने इच्छुक थे। इसी प्रकार कवि ने इस पुस्तक की पहली सूक्ति भी स्वय विशेप रूप से लिखाई थी।

जव खलील जिब्रान को टाइप हुई पाण्डुलिपि दिखाई गई, तो उन्होने देखकर विस्मयपूर्ण आकृति से पूछा, "क्या सचमुच मैंने ही यह सव कुछ रचा है या तुमने इन्हे वनाने में मेरी सहायता की है?" वार-वैरा यग ने उत्तर दिया, "मेरा एक भी शव्द नही है। और आप इसे जानते हैं। इन पक्तियो में से हर एक पक्ति जिब्रान है, वे और कोई नही हो मकती।"

टाइपलिपि प्रकाशक को दे दी गई और वह सन् १९२६ में प्रकाशित हुई। जिब्रान सदा इस पुस्तक को 'कहावतों की पुस्तिका' कहा करते थे।

श्रीमती वारवैरा यग और दूसरे व्यक्तियो का मत है, "अग्रेजी में इस पुस्तक के समान कहावतों की और दूसरी पुस्तक नहीं है। इस पुस्तक में ऊचाई, गहराई और विशालता के ही तीन परिमाण (Three Dimensions) नहीं हैं, इसमें चौथा परिमाण समयहीनता (Timelessness) भी है, जो कि अनन्त या असीम का ही दूसरा नाम है।"

कवि की कुछ सूक्तिया देखिए—

सत्य को जानना तो सदा चाहिए, पर उसको कहना कभी-कभी चाहिए।

◇ ◇ ◇

सत्य को सुननेवाला सत्य बोलनेवाले से कुछ कम नही है।

◇ ◇ ◇

बहुत-से मत-मतान्तर खिडकी के शीशों के सदृश हैं। हम उनमें से सत्य को देखते तो हैं, पर वे हमें सत्य से अलग ही रखते हैं।

◇ ◇ ◇

जब तुम सूर्य की ओर पीठ फेर लेते हो, तब तुम अपनी परछाईं के सिवा और क्या देख सकते हो?

◇ ◇ ◇

दानशीलता यह नहीं है कि तुम मुझे वह वस्तु दो जिसकी आवश्यकता मुझे तुमसे अधिक है, वरन् यह है कि तुम मुझे वह वस्तु दो जिसकी आवश्यकता तुम्हे मुझसे अधिक है।

◇ ◇ ◇

जो आदमी भलाई को बुराई से अलग करनेवाली रेखा पर अगुली रख सकता है, निस्सन्देह वही आदमी परमात्मा के चरणो को छू सकता है।

◇ ◇ ◇

यदि तुम्हारे हृदय में ज्वालामुखी धधक रहा है, तो तुम अपने हाथों में फूलों के खिलने की आशा कैसे कर सकते हो?

◇ ◇ ◇

कवि की अपराध की परिभाषा देखिए—

अपराध क्या है? या तो यह आवश्यकता का दूसरा नाम है या किसी बुराई का लक्षण।

बदले हुए युग में निर्धनो के महत्व को बताते हुए जिब्रान कहते हैं—

प्राचीन काल में गुणी लोग राजाओ की सेवा करने मे गौरव अनुभव करते थे।

पर आज वे निर्धनो की सेवा करने मे सम्मान का दावा करते है।

ऐसी ही सुन्दर तथा अनमोल कहावतो से यह पुस्तक भरी पडी है। ये मोती और हीरो से भी अधिक मूल्यवान हैं। ये गाठ में बाधकर रखने योग्य हैं, जिससे समय पर काम आए। इनमें उस विचारक के विचार हैं, जिसने जीवन की नाडी पर हाथ रखा है, और जिसने जीवन की थाली से खाना और प्याले से पानी पीया है, न कि उस आदमी के विचार है, जिसने जीवन को केवल देखा है और उसकी आलोचना की है। बारबैरा यग के शब्दो में "जिब्रान ने इनमें वही काम किया है, जो कि उसने 'प्राफट' में किया था। जीवन और मृत्यु के बीच की बातो को हमें दिखाया है, पर इनके ढग जरा भिन्न हैं।"

जिब्रान की इस श्रेष्ठ कृति का अनुवाद मैंने तेरह नवम्बर सन '४९ को दूसरी पुस्तकों के अनुवाद के साथ-साथ ही आरम्भ किया और पन्द्रह अक्तूबर सन १९५० को पूरा किया। इसके प्रकाशित होने पर मुझे खेद भी है और हर्ष भी। खेद इसलिए कि हिन्दी में छोटी से छोटी श्रेष्ठ कृति को भी प्रकाशित होने में इतना समय लगता है। और हर्ष इसलिए कि हिन्दी में गुण-ग्राहकता की कमी नही है। इस खेद और हर्ष के मेल का नाम ही जीवन है।

दिल्ली
एक अगस्त, '५६।

माईदयाल जैन



Khalil Gibran

खलील जिब्रान : परिचय

ससार के महाकवियो की नामावलि में महाकवि खलील जिब्रान का नाम एक नई वृद्धि है। यद्यपि यह विश्व-विख्यात और अन्तर्राष्ट्रीय कवि थे, तो भी चूंकि इन्होंने एशिया के लेबनान देश को अपने जन्म से पवित्र किया था, इस नाते हम भारतवासी भी इन पर उचित गर्व कर सकते हैं।

इनका जन्म ६ जनवरी, १८८३ ई० को लेबनान के बशरी नगर में एक सम्पन्न और नामी ईसाई घर में हुआ था। इनकी मा का नाम कलीमा रहीमी था।

बारह वर्ष की छोटी आयु में ही इन्हें अपने माता-पिता के साथ बेल्जियम, फ्रान्स और सयुक्त राज्य अमरीका आदि देशों में भ्रमण करना पड़ा, जिससे इनका ज्ञान और अनुभव बहुत बढ़ गया। यह अरबी, अगरेजी और फ्रासीसी भाषाओ के बडे विद्वान् थे और पहली दो भाषाओ पर तो इनको इतना अधिकार प्राप्त था कि इनकी समस्त रचनाए इन्ही भाषाओं में हैं। यह कवि, दार्शनिक और चित्रकार थे। अपनी रचनाओ और उग्र आलोचनाओं के कारण इनको अपने देश के पादरियों, जागीरदारों और अधिकारी वर्ग का कोप-भाजन बनना पड़ा, जिन्होंने इनको न केवल जाति से ही बहिष्कृत किया, बल्कि देश से भी निकाल दिया। फिर यह १९१२ ई० में सयुक्त राज्य अमरीका के न्यूयार्क नगर में स्थायी रूप से रहने लगे।

खलील जिब्रान अद्भुत कल्पना-शक्ति रखते थे। और वह भारत के विश्वविख्यात महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की तुलना के थे। इन्होंने बारह वर्ष की अल्प आयु में ही अरबी में लिखना आरम्भ कर दिया था। इन्होंने लगभग पच्चीस पुस्तकें लिखी, जो इनके अपने ही बनाए हुए चित्रो से सुसज्जित हैं। इनका ससार की बीस-बाईस प्रसिद्ध भाषाओ में अनुवाद हो चुका है। इससे उनके प्रशसको और पाठको की सख्या का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। भारतवर्ष में हिन्दी, गुजराती, उर्दू और मराठी मे उनकी बहुत-सी पुस्तको का अनुवाद हो चुका है। यहा यह उल्लेखनीय है, कि उर्दू और मराठी में खलील जिब्रान की रचनाओ के सबसे अधिक अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। पर यह सन्तोष की बात है, कि हिन्दी-जगत मे भी खलील जिब्रान बहुत प्रिय बन गये हैं। उनकी कई पुस्तको के हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं।

खलील जिब्रान एक महान् चित्रकार भी थे। और उनके चित्रो की सयुक्त राज्य अमरीका, इग्लैड और फ्रास में कई प्रदर्शनिया हुईं, जिनमें प्रदर्शित चित्रो की नामी चित्र-आलोचको ने मुक्तकठ से प्रशसा की थी।

यह ईसाई धर्म के अनुयायी थे, पर पादरियो और अधविश्वासो के सदा कट्टर विरोधी रहे। यह महान् देशभक्त थे और अपने देशवासियो से इतने सताए जाने पर भी अपने देश के लिए सदा कुछ न कुछ लिखते रहे। अडतालीस वर्ष की आयु में एक मोटर दुर्घटना में ये सख्त घायल हो गए और १० अप्रैल, सन् १९३१ में न्यूयार्क में इनका देहान्त हो गया। दो दिन तक इनके शव के अतिम दर्शनो के लिए सहस्रो आदमियो के झुड के झुड आते रहे। इनका शव इनकी अपनी जन्मभूमि को वापस लाया गया और बडी शान और राजसी सम्मान के साथ इनके अपने नगर के एक गिरजाघर मे दफन किया गया।

आज मैं यह समझता हूं कि मैं स्वय ही वह घेरा हू जिसमे समस्त जीवन नियमित रूप से घूमनेवाले टुकडो के साथ चक्कर लगा रहा है।

  

लोग अपनी जाग्रत अवस्था मे मुझसे कहते हैं, "तू और यह ससार, जिसमे तू रहता है, एक अनन्त समुद्र के अनन्त तट का केवल रज कण मात्र है।"

और मैं अपनी स्वप्नमय अवस्था मे उनसे कहता हू, "मैं तो अनन्त समुद्र हू और तीनो लोक मेरे तट पर रज के कण हैं।"

  

मैं केवल एक वार ही निरुत्तर हुआ हू। ऐसा भी तव ही हुआ, जवकि एक आदमी ने मुझसे पूछा, "तुम कौन हो ?"

  

परमात्मा के सर्वप्रथम विचार मे एक देवता था। पर परमात्मा के सर्वप्रथम वचन से मानव—इन्सान—ही निकला।

  

समुद्र और जगल की वायु से हमे वाणी मिलने से सहस्रो वर्ष पहले, हम इन्सान सृष्टि के फडफडाते और घूमते हुए इच्छुक जीव मात्र थे।

जव ऐसी अवस्था हो, तो फिर हम अपनी पुरानी वातो को केवल कल के शब्दो मे किस तरह वर्णन कर सकते है ?

  

स्फिक्स[1] अपने जीवन में केवल एक वार ही वोला और तव उसने यही कहा, "एक रजकरण मरुस्थल–सहरा–है और एक मरुस्थल रजकरण है। अव हम सवको मौन धारण कर लेना चाहिए।"

मैंने उसकी वात सुनी तो अवश्य, पर मै समझा कुछ भी नहीं।

◇ ◇ ◇

मैंने एक वार एक स्त्री के चेहरे पर नजर डाली और उसके उन सव वच्चो को देख लिया, जो अव तक पैदा भी नही हुए थे।

एक स्त्री ने मुझे देखा और उसने मेरे सभी पूर्वजो को जान लिया, यद्यपि वे उसके जन्म से पहले ही मर चुके थे।

◇ ◇ ◇

मैं चाहता हूं कि मैं अपने परम ध्येय की पूर्ति करूं। परन्तु यह कैसे हो सकता है, जव तक कि मैं स्वय अपने आपको उस महानता मे लीन न कर दू, जो वुद्धिमान आदमियो के जीवन में पाई जाती है?

क्या यही महानता हर एक मानव का ध्येय नही है?

◇ ◇ ◇

---

१ यूनान के पौराणिक साहित्य में एक ऐसे राक्षस का उल्लेख है, जिसके पंख होते हैं और जिसका शरीर शेर का और मुख स्त्री का होता है। इसके वारे में यूनान में कई कथाएं प्रसिद्ध हैं। इसे स्फिंक्स कहते हैं। मिस्र देश के प्राचीन साहित्य में भी स्फिक्स नाम की मूर्ति का वर्णन है, जिसका शरीर शेर का और मुख स्त्री का वताया गया है।

आज मैं यह समझता हू कि मैं स्वय ही वह घेरा हू जिसमें समस्त जीवन नियमित रूप से घूमनेवाले टुकडो के साथ चक्कर लगा रहा है।

◇ ◇ ◇

लोग अपनी जाग्रत अवस्था मे मुझसे कहते हैं, "तू और यह ससार, जिसमे तू रहता है, एक अनन्त समुद्र के अनन्त तट का केवल रज कण मात्र है।"

और मैं अपनी स्वप्नमय अवस्था मे उनसे कहता हू, "मैं तो अनन्त समुद्र हू और तीनो लोक मेरे तट पर रज के कण है।"

◇ ◇ ◇

मैं केवल एक वार ही निरुत्तर हुआ हू। ऐसा भी तव ही हुआ, जवकि एक आदमी ने मुझसे पूछा, "तुम कौन हो ?"

◇ ◇ ◇

परमात्मा के सर्वप्रथम विचार मे एक देवता था। पर परमात्मा के सर्वप्रथम वचन से मानव—इन्सान–ही निकला।

◇ ◇ ◇

समुद्र और जगल की वायु से हमे वाणी मिलने से सहस्रो वर्ष पहले, हम इन्सान सृष्टि के फड़फडाते और घूमते हुए इच्छुक जीव मात्र थे।

जव ऐसी अवस्था हो, तो फिर हम अपनी पुरानी वातो को केवल कल के शब्दो मे किस तरह वर्णन कर सकते है ?

◇ ◇ ◇

स्फिंक्स[1] अपने जीवन में केवल एक बार ही बोला और तब उसने यही कहा, "एक रजकरण मरुस्थल—सहरा—है और एक मरुस्थल रजकरण है। अब हम सबको मौन धारण कर लेना चाहिए।"

मैंने उसकी बात सुनी तो अवश्य, पर मैं समझा कुछ भी नहीं।

  

मैंने एक बार एक स्त्री के चेहरे पर नजर डाली और उसके उन सब बच्चों को देख लिया, जो अब तक पैदा भी नहीं हुए थे।

एक स्त्री ने मुझे देखा और उसने मेरे सभी पूर्वजों को जान लिया, यद्यपि वे उसके जन्म से पहले ही मर चुके थे।

  

मैं चाहता हूं कि मैं अपने परम ध्येय की पूर्ति करूं। परन्तु यह कैसे हो सकता है, जब तक कि मैं स्वयं अपने आपको उस महानता में लीन न कर दूं, जो बुद्धिमान आदमियों के जीवन में पाई जाती है?

क्या यही महानता हर एक मानव का ध्येय नहीं है?

  

---

१ यूनान के पौराणिक साहित्य में एक ऐसे राक्षस का उल्लेख है, जिसके पंख होते हैं और जिसका शरीर शेर का और मुख स्त्री का होता है। इसके बारे में यूनान में कई कथाएं प्रसिद्ध हैं। इसे स्फिंक्स कहते हैं। मिस्र देश के प्राचीन साहित्य में भी स्फिंक्स नाम की मूर्ति का वर्णन है, जिसका शरीर शेर का और मुख स्त्री का बताया गया है।

◇ ◇ ◇

आकाश-गगा के झरोखो मे से देखनेवाले के लिए धरती और आकाश के बीच का लोक लोक नही है।

◇ ◇ ◇

मानवता प्रकाश की वह प्रवाहशील नदी है, जो अनादि से अनन्त की ओर बहती है।

◇ ◇ ◇

क्या देवलोक में रहनेवाली आत्माए दुख और शोक के मारे इन्सान पर ईर्ष्या नही करती ?

◇ ◇ ◇

तीर्थस्थान को जाते हुए मेरी भेंट एक दूसरे यात्री से हुई। मैंने उससे पूछा, "क्या तीर्थ का ठीक रास्ता यही है ?"

उसने उत्तर दिया, "मेरे पीछे-पीछे चले आओ, एक दिन और एक रात मे तुम तीर्थक्षेत्र पहुच जाओगे ?"

मैं उसके पीछे-पीछे हो लिया। कई दिन और कई रात हम चलते रहे, फिर भी हम तीर्थ[illegible] हुचे।

मुझे यह देखकर वड़ा आश्च[illegible] यात्री इस वात पर मुझपर क्रोध कर रहा [illegible] पर नही चलाया।

◇ ◇

परमात्मा ! इससे पहले कि [illegible] वनाए, मुझे शेर का शिकार वना[illegible]

◇ ◇

रात के रास्ते में से होकर जाने के सिवा प्रभात तक कोई कैसे पहुच सकता है ?

◇ ◇ ◇

मेरा घर मुझसे कहता है, "मुझे मत छोड क्योकि तेरा अतीत यही है ।"

और मेरा रास्ता मुझसे कहता है, "मेरे पीछे-पीछे चला आ क्योकि मैं तेरा भविष्य हू ।"

पर मै अपने घर और रास्ते दोनो से कहता हू, "मेरा न कोई अतीत है और न भविष्य । यदि मै यहा ठहरू, तो मेरे ठहरने मे ही मेरा चलना है । और यदि मैं चलू, तो मेरा चलना ही मानो मेरा ठहरना है । केवल प्रेम और मौत सब वस्तुओ को वदलते हैं ।"

◇ ◇ ◇

मैं जीवन के न्याय पर से अपना विश्वास कैसे उठा दू, जब कि मैं यह जानता हू कि नरम-नरम मखमली गद्दो पर सोनेवालो के स्वप्न कठोर धरती पर सोनेवालो के स्वप्नो से अधिक मधुर नही होते ?

◇ ◇ ◇

यह वड़ी ही विचित्र वात है कि कुछ सुखो की इच्छा ही मेरे दु खो का अश है ।

◇ ◇ ◇

सात वार मैंने अपनी आत्मा को धिक्कारा है—

१—जब मैंने उसे वडप्पन-प्राप्ति के लिए नरम होते देखा ।

२—जब मैंने उसे पतितो के सामने झुककर चलते देखा ।

३—जब उसे सरल और कठोर कामो मे से किसी एक काम को चुनने का मौका दिया गया, और उसने सरल काम को पसन्द किया।

४—जब उसने कोई अपराध और पाप किया और यह कहकर अपने को सतोष दे लिया कि दूसरे भी उसकी ही तरह अपराध और पाप करते हैं।

५—जब उसने अपनी दुर्बलता के कारण किसी अत्याचार को सहन किया और फिर यह कहा कि सतोष और शाति धारण करना भी गुण है।

६—जब उसने किसी कुरूप चहरे को देखकर उससे घृणा की और यह न समझा कि वास्तव मे यह उसका—मेरी आत्मा—का ही दूसरा रूप है।

७—जब उसने अपनी बडाई की डीग मारी या दूसरो की अनुचित प्रशसा की और उसे भी एक गुण समझा।

  

मैं 'पूर्ण सत्य' से अपरिचित हू। पर मै अपने अज्ञान के सामने नम्र बन जाता हू और मेरे लिए इसीमे गर्व भी है और पुरस्कार भी।

  

इन्सान की कल्पनाओ और उसकी पहुच के बीच मे अतर है, जिसे केवल उसकी इच्छा ही पार कर सकती है।

  

स्वर्ग इस द्वार के पीछे बराबरवाले कमरे मे है, परन्तु उनकी कुजी मेरे पास से खो गई है। नही-नही, शायद मैंने कही

दूसरे स्थान पर उसे रख दिया है।

  

तुम अंधे हो और मैं बहरा और गूगा। इसलिए आओ हम आपस मे मिलें और ससार को समझें।

  

मानव की प्रतिष्ठा और गौरव उस वस्तु से नही है, जिसे कि वह प्राप्त करता है, बल्कि उस वस्तु से है, जिसकी प्राप्ति के लिए वह तडपता रहता है।

  

हममे से कुछ स्याही के सदृश है और कुछ कागज के सदृश।

यदि हममे से कुछ मे कालापन न होता, तो हममें से कुछ गूगे ही बने रहते।

और यदि हममे से कुछ मे सफेदी न होती, तो हम में से कुछ अंधे ही रह जाते।

  

तुम जरा मेरी बात सुनो, मैं तुम्हे बोलना सिखा दूगा।

  

हमारा मन अस्पन्ज के समान है, और हमारा हृदय एक नदी।

तो क्या यह आश्चर्य की बात नही है कि हममें से बहुत-से बहता रहने की अपेक्षा चूसने को अधिक पसन्द करते हैं?

  

जब तुम उन वरदानो की इच्छा करते हो, जिनके नाम

तुम्हे मालूम न हो और जब तुम शोकातुर हो, पर अपने शोक का कारण न जानते हो, वास्तव में उस समय ही बढती हुई वस्तुओ के साथ-साथ तुम भी बढ रहे हो और अपनी आत्मा की महानता की ऊचाइयो की तरफ उठ रहे हो।

◇ ◇ ◇

जब इन्सान किसी विचार के नशे मे चूर होता है, तब वह उसकी धुधली अभिव्यक्ति को ही मदिरा कहने लगता है।

◇ ◇ ◇

तुम मदिरा इसलिए पीते हो कि तुम मस्त हो जाओ, और मैं मदिरा इसलिए पीता हू कि वह मेरी दूसरी मस्तियो के नशे को कम कर दे।

◇ ◇ ◇

जब मेरा प्याला खाली होता है, तब तो मैं सतोप कर लेता हू। पर जब वह आधा भरा होता है, तो मैं उसपर क्रोध करता हू।

◇ ◇ ◇

इन्सान की वास्तविकता उन वस्तुओ मे नही है, जिन्हे वह तुमपर प्रकट करता है, बल्कि उन वस्तुओ मे है, जिन्हे वह तुमपर प्रकट नही कर सकता।

इसलिए यदि तुम इन्सान को समझना चाहते हो, तो जो कुछ वह कहता है, उसे मत सुनो, बल्कि उन बातो को सुनो जिन्हें वह कह नही रहा है।

◇ ◇ ◇

जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, इसका आधा भाग निरर्थक

है, पर मैं इसको इसलिए कहता हूं कि दूसरा आधा भाग तुम्हारी समझ मे आ जाए।

◇ ◇ ◇

आनन्दवृत्ति सन्तुलन की भावना के सदृश है।

◇ ◇ ◇

मेरे मन मे एकान्तवास की इच्छा उस समय पैदा हुई, जब कि लोगो ने मेरे प्रकट दोषो की तो प्रशसा की और मेरे अप्रकट गुणो की निंदा की।

◇ ◇ ◇

जब जीवन को अपने हृदय का गीत गानेवाला गायक नही मिलता, तभी वह किसी ऐसे दार्शनिक को जन्म देता है, जो उसके मन की बात कह सके।

◇ ◇ ◇

सत्य को जानना तो सदा चाहिए, पर उसको कहना कभी-कभी चाहिए।

◇ ◇ ◇

हममें जो सत् तत्व है, वह तो मौन रहता है, पर जो बाहर से प्राप्त किया हुआ तत्व है, वही बोलता रहता है।

◇ ◇ ◇

मेरे जीवन की आवाज तेरे जीवन के कानो तक नही पहुच सकती। फिर भी हमे आपस मे बातें करते ही रहनी चाहिएं, जिससे हम अकेलापन अनुभव न करे।

◇ ◇ ◇

जब दो स्त्रिया आपस में बातें करती हैं, तो वह कुछ भी

नहीं कहती, पर जब एक स्त्री बोलती है तो वह समस्त जीवन को प्रकट कर देती है।

◇ ◇ ◇

कभी-कभी मेढक बैलो से भी अधिक शोर कर सकते हैं, पर मेढक न खेत मे हल चला सकते हैं, न कोल्हू मे जोते जा सकते हैं और न तुम उनकी खाल से जूतिया ही बना सकते हो।

◇ ◇ ◇

बातूनी आदमी पर सिवाय गूगे आदमी के और कोई दूसरा ईर्ष्या नही करता।

◇ ◇ ◇

यदि शीत ऋतु यह कहे कि वसंत ऋतु मेरे हृदय में है, तो उसकी बात कौन मानेगा ?

◇ ◇ ◇

हर एक बीज एक इच्छा के सदृश है।

◇ ◇ ◇

यदि तुम सचमुच आखें खोलकर देखो तो तुम्हे प्रत्येक चहरे मे अपनी आकृति दिखाई देगी।

और यदि अच्छी तरह कान खोलकर सुनो तो तुम्हे सभी वाणियो मे अपनी वाणी सुनाई देगी।

◇ ◇ ◇

सत्य की खोज करने के लिए दो आदमी चाहिए, एक इसको कहनेवाला और दूसरा उसे समझनेवाला।

◇ ◇ ◇

हम शब्दो की लहरो मे हर समय डूबे रहते हैं, पर हमारा

अतरग सदा चुप रहता है।

  

बहुत-से मत-मतान्तर खिडकी के शीशो के सदृश हैं। हम उनमे से सत्य को देखते तो हैं, पर वे हमे सत्य से अलग ही रखते हैं।

  

आओ, हम आख-मिचौनी का खेल खेलें और एक दूसरे को ढूढें। यदि तुम मेरे हृदय मे छुपो तो तुम्हे ढूढना मेरे लिए कठिन न होगा। पर यदि तुम अपने ही तन मे छुप गए तो मेरे लिए तुमको ढूढना ही व्यर्थ होगा।

  

एक स्त्री अपने चेहरे के भावो को एक हल्की-सी मुस्कराहट के परदे से ढक सकती है।

  

वह दु:खी हृदय भी कितना श्रेष्ठ है, जो दूसरे प्रसन्नचित्त मनुष्यो के साथ आनन्दपूर्ण गीत गा सकता है।

  

जो आदमी एक स्त्री को समझ सकता है, एक प्रतिभाशाली मनुष्य की सूक्ष्म परीक्षा कर सकता है और मौन के रहस्य का पता लगा सकता है, वास्तव मे वही आदमी एक मधुर स्वप्न से जागकर प्रात काल कलेवे के लिए बैठता है।

  

मैं सभी चलनेवालो के साथ चलूगा और अवश्य चलूगा। पर मै पास से जानेवाले आदमियो की भीड़ का तमाशा देखने

एक कवि सिंहासन से उतारे हुए राजा के सदृश है, जो अपने महल की राख पर बैठा इससे अनेक प्रकार की मूर्तिया बना रहा है।

  

आनन्द, वेदना और आश्चर्य के रस मे कुछ शब्दो को समो देना ही कविता है।

  

कवि अपने हृदय के गीतो के निकास को ढूढने का प्रयत्न व्यर्थ करता है।

  

एक बार मैंने एक कवि से कहा, "हम तुम्हारा महत्व तुम्हारे मरने के बाद तक न जानेंगे।"

उसने उत्तर दिया, "हा, मृत्यु ही यथार्थता को सदा प्रकट करती है। और यदि तुम वास्तव मे मेरा मूल्य जानना चाहते हो, तो इसका कारण यही है कि जो कुछ मेरी जीभ पर है, उसमे कही अधिक मेरे हृदय मे है, और जो कुछ मेरे हाथ मे है, उससे कही अधिक मेरी तमन्नाओ मे है।"

  

यदि तुम सौन्दर्य के गीत गाओगे, तो उनको सुननेवाला तुम्हे अवश्य मिल जाएगा, चाहे तुम सहरा के बीच मे ही क्यो न गाओ।

  

कविता वह दर्शन है, जो हृदयो को मोह लेता है। और दर्शन वह कविता है, जो मन मे गाता है। यदि हम दोनो का

समन्वय कर सकें, और एक ही समय मे मनुष्य के हृदय को मोह भी सकें और उसके मन मे गा भी सकें, तो सचमुच वह परमात्मा की छाया मे जीवन बिताने लगे।

◇ ◇ ◇

अंत. प्रेरणा के गीत सदा गाए जाते हैं, अतः प्रेरणा की व्याख्या नही की जाती।

◇ ◇ ◇

हम प्राय बच्चो को सुलाने के लिए लोरी गाते हैं, जिससे कि हम स्वयं सो सकें।

◇ ◇ ◇

हमारी सब कविताएं रोटी के ऐसे कौर हैं, जो कल्पना-शील मन के भोजन से गिरते हैं।

◇ ◇ ◇

विचार और चिंतन कविता के रास्ते मे बड़ी रुकावट है।

◇ ◇ ◇

सबसे बडा गायक वह है, जो हमारे मौन के गीत गाता है।

◇ ◇ ◇

तुम्हारा पेट तो भरा हुआ है, फिर तुम कैसे गा सकते हो ?

तुम्हारे हाथ तो रुपयो से भरे हुए हैं, फिर वे परमात्मा की वन्दना के लिए कैसे उठ सकते हैं ?

◇ ◇ ◇

एक कवि सिंहासन
अपने महल की राख पर
बना रहा है।



आनन्द, वेदना
समो देना ही कवित



कवि अपने हृद
व्यर्थ करता है।



एक बार मैंने
तुम्हारे मरने के ट

उसने उत्तर
करती है। और
हो, तो इसका का
उससे कही अधिक
है, उससे कही अधि



यदि तुम सौन्द
तुम्हे अवश्य मिल ज
न गाओ।



कविता वह दश
दर्शन वह कविता है

तुम्हारी अन्तरात्मा तुम्हारे लिए सदा दुख मानती रहती है। पर यह दुख ही उसको पुष्ट करनेवाला भोजन है। इसलिए यह सब ठीक ही है।

◇ ◇ ◇

आत्मा और शरीर का सघर्ष उन आदमियो के हृदयो के सिवाय और कही नही है, जिनकी आत्माए सो रही हैं और जिनके शरीर ताल-स्वर-हीन हैं।

◇ ◇ ◇

यदि तुम जीवन की तह तक पहुच जाओ, तो तुम्हे हर एक वस्तु मे सौन्दर्य दिखाई देगा। यहा तक कि उन आंखों में भी जो सौन्दर्य को देखने मे असमर्थ हैं।

◇ ◇ ◇

सौन्दर्य हमारी खोई हुई पूजी है, जिसे हम समस्त जीवन खोजते रहते हैं। इसके सिवा सब कुछ प्रतीक्षा की एक न एक विधि है।

◇ ◇ ◇

बीज डालो। धरती तुम्हारे लिए फूल पैदा करेगी। अपने स्वप्नो की आकाश मे तलाश करो। आकाश तुम्हे तुम्हारी प्रेयसी से मिला देगा।

◇ ◇ ◇

शैतान तो उसी दिन मर गया, जिस दिन तुम जन्मे थे।

अब तुम्हे देवताओ के दर्शन के लिए नर्क मे से गुजरने की क्या आवश्यकता ?

◇ ◇ ◇

बहुत-सी स्त्रिया पुरुषो का मन मोह लेती हैं, पर विरले

कहा जाता है, कि बुलबुल जब प्रेमभरे गीत गाती है, तो पहले अपने हृदय को काटे से चीर डालती है।

हमारा भी यही हाल है। नही तो, हम प्रेम के गीत कैसे गा सकते हैं ?

  

प्रतिभा एक गीत है, जिसे पक्षी बड़ी प्रतीक्षा के बाद आनेवाली वसन्त ऋतु के आने पर गाता है।

  

महात्मा भी शारीरिक आवश्यकताओ से छुटकारा नही पा सकते।

  

एक पागल भी मेरे और तुम्हारे से कम गवैया नही है। अन्तर केवल यही है कि जिन बाजो को वह बजाता है, वे कुछ बेसुरे हैं।

  

मा के हृदय की खामोशियो मे सोया हुआ गीत उसके बच्चे के होठो पर खेलता है।

  

इस ससार मे ऐसी कोई इच्छा नही है, जो पूरी न हो सके।

  

मैं अपनी अन्तरात्मा से कभी पूरे रूप से सहमत नही हुआ हू। मालूम होता है कि यथार्थ बात कही हम दोनो के बीच में है।

  

तुम्हारी अन्तरात्मा तुम्हारे लिए सदा दुख मानती रहती है। पर यह दुख ही उसको पुष्ट करनेवाला भोजन है। इसलिए यह सब ठीक ही है।



आत्मा और शरीर का सघर्ष उन आदमियो के हृदयो के सिवाय और कही नही है, जिनकी आत्माए सो रही हैं और जिनके शरीर ताल-स्वर-हीन हैं।



यदि तुम जीवन की तह तक पहुच जाओ, तो तुम्हें हर एक वस्तु मे सौन्दर्य दिखाई देगा। यहा तक कि उन आंखो मे भी जो सौन्दर्य को देखने मे असमर्थ हैं।



सौन्दर्य हमारी खोई हुई पूजी है, जिसे हम समस्त जीवन खोजते रहते हैं। इसके सिवा सब कुछ प्रतीक्षा की एक न एक विधि है।



बीज डालो। धरती तुम्हारे लिए फूल पैदा करेगी। अपने स्वप्नो की आकाश मे तलाश करो। आकाश तुम्हे तुम्हारी प्रेयसी से मिला देगा।



शैतान तो उसी दिन मर गया, जिस दिन तुम जन्मे थे। अब तुम्हे देवताओ के दर्शन के लिए नर्क मे से गुजरने की क्या आवश्यकता ?



बहुत-सी स्त्रियां पुरुषो का मन मोह लेती हैं, पर विरले

ही स्त्रियां उनको अपने वश मे रख सकती हैं।

◇ ◇ ◇

यदि तुम किसी वस्तु को लेना चाहते हो, तो उसके लिए दावा मत करो।

◇ ◇ ◇

पुरुष जब एक स्त्री के हाथ को छूता है, तो वे दोनो अनन्त की आत्मा को छूते हैं।

◇ ◇ ◇

प्रेम दो प्रेमियो के बीच मे एक परदा है।

◇ ◇ ◇

हर एक पुरुष दो स्त्रियो से प्रेम करता है। एक वह स्त्री जिसकी रचना उसकी कल्पना करती है और दूसरी वह जिसने अभी तक जन्म नही लिया है।

◇ ◇ ◇

जो पुरुष स्त्रियो के छोटे-छोटे अपराधो को क्षमा नही करते, वे उसके महान् गुणो का सुख नही भोग सकते।

◇ ◇ ◇

जो प्रेम नित नया नही होता रहता, वह एक आदत का रूप धारण कर लेता है और फिर बधन बन जाता है।

◇ ◇ ◇

दो प्रेमी आलिगन करते समय एक दूसरे का इतना आलिगन नही करते जितना कि वे अपने बीच की किसी वस्तु का आलिगन करते हैं।

◇ ◇ ◇

प्रेम और सन्देह मे आपस मे कभी मेलजोल नही हो

सकता। वे दोनो एक हृदय मे नही रह सकते।

◇ ◇ ◇

प्रेम एक दिव्य शब्द है, जिसे प्रकाशपूर्ण हाथ ने ज्योतिर्मय पृष्ठ पर लिखा है।

◇ ◇ ◇

मित्रता सदा एक मधुर उत्तरदायित्व है, न कि स्वार्थ-पूर्ति का अवसर।

◇ ◇ ◇

यदि तुम अपने मित्र को सब परिस्थितियो मे नही जान सकते, तो तुम उसे कभी नही समझ सकोगे।

◇ ◇ ◇

तुम्हारे सुन्दरतम वस्त्र किसी दूसरे आदमी के बुने हुए है।

तुम्हारे स्वादिष्ट भोजन वे हैं, जो तुमने किसी दूसरे की रसोई मे खाए है।

तुम्हारा अत्यन्त सुखदायक बिस्तर वह है, जिसपर तुम किसी दूसरे के घर मे सोए हो।

फिर तुम ही बताओ, तुम अपने आपको दूसरे आदमी से कैसे अलग कर सकते हो?

◇ ◇ ◇

तुम्हारी बुद्धि और मेरे हृदय मे उस समय तक मेल नही हो सकता, जब तक कि तुम्हारी बुद्धि हिसाब लगाना न छोड़ दे और मेरा हृदय अन्धकार मे रहना।

◇ ◇ ◇

हम एक दूसरे को उस समय तक नही समझ सकते,

जब तक कि हम भाषा को सात शब्दों[1] में सीमित न कर दें।

  

मेरे हृदय की बात कैसे प्रकट हो सकती है, जब तक कि उसकी मुहरें न टूटें ?

  

तुम्हारी यथार्थता को केवल महान दुःख या महान सुख ही प्रकट कर सकता है।

इसलिए यदि तुम अपनी यथार्थता को प्रकट करना चाहते हो, तो या तो तुम्हे नग्न होकर दिन मे नाचना होगा, या फासी पर चढना होगा।

  

यदि प्रकृति हमारे सतोष के उपदेश सुन ले, तो न कोई दरिया समुद्र तक जा पाएगा और न शीत ऋतु वसत मे ही बदलेगी।

और यदि वह हमारी मितव्ययिता की सब बातें सुन ले, तो हममे से कितने इस वायु मे सास ले सकेंगे ?

  

जब तुम सूर्य की ओर पीठ फेर लेते हो, तब तुम अपनी परछाईं के सिवा और क्या देख सकते हो ?

तुम दिन के सूर्य के सामने भी स्वतत्र हो।

तुम रात के चाद-तारो के सामने भी स्वतत्र हो।

---

१. वे सात शब्द ये हैं—तुम, मैं, लो, परमात्मा, प्रेम, सुन्दरता, धरती। देखें—बारबॅरा यग रचित 'दिस मैन फ्राम लेबनान', पृ० ९१ ।

और तुम तब भी स्वतन्त्र हो, जब न सूर्य है और न चाद-तारे।

ससार की सब वस्तुओं की तरफ से आखे बद कर लेने पर भी तुम स्वतन्त्र हो।

पर तुम उस आदमी के सामने गुलाम हो, जिसे तुम प्रेम करते हो, क्योकि तुम उससे प्रेम करते हो।

और तुम गुलाम हो उस आदमी के सामने, जो तुम्हे प्रेम करता है, क्योकि वह तुम्हे प्रेम करता है।

  

मन्दिर के द्वार पर हम सब भिखारी हैं।

और जब हम मन्दिर मे प्रवेश करते हैं और बाहर आते हैं, तो, हममे से हर एक आदमी ससार के सम्राट्--परमात्मा--से अपना-अपना अश, हिस्सा लेकर चला आता है।

फिर भी हम एक दूसरे से ईर्ष्या करते हैं। हमारा यह व्यवहार उस सम्राट् को तुच्छ समझने का ही एक दूसरा ढग है।

  

तुम अपनी भूख से अधिक नही खा सकते। इसलिए जो आधी रोटी तुमने नही खाई है, वह किसी दूसरे का हिस्सा है। और हां, तुम्हे कुछ रोटी अकस्मात् आ जाने वाले अतिथि के लिए भी रखनी चाहिए।

  

यदि अतिथि न होते तो सब घर कब्रें बन जाते।

  

एक दयालु भेडिए ने एक भोली भेड से कहा, "क्या आप दर्शन देकर हमारे घर की शोभा न बढाएगी ?"

भेड ने उत्तर दिया, "आपके घर आना हमारे लिए बडे सौभाग्य और गर्व की बात होती, यदि वह घर आपके पेट मे न होता ।"

  

मैने द्वार पर अपने अतिथि को रोककर कहा, "मेरे घर मे भीतर प्रवेश करते समय अपने पाव न झाडिए, जब आप जाएगे, तब अपने पाव झाडिए ।"

  

दानशीलता यह नही है कि तुम मुझे वह वस्तु दो, जिसकी आवश्यकता मुझे तुमसे अधिक है । वरन यह है कि तुम मुझे वह वस्तु दो जिसकी आवश्यकता तुम्हे मुझसे अधिक है ।

  

तुम निस्सन्देह बडे दयालु और दानी हो, जब तुम किसी की आवश्यकता पूरी करते हो ।

पर ध्यान रहे कि दान देते समय अपना मुह दान लेने वाले की ओर से परे फेर लिया करो, जिससे कि तुम लेने वाले की झिझक और लज्जा को न देखो ।

  

अत्यन्त धनी और अत्यन्त निर्धन मे एक दिन की भूख और एक घडी की प्यास का अन्तर है ।

  

हम प्राय. पुराना ऋण उतारने के लिए नया ऋण लेते हैं।

  

मेरे पास देवता भी आते हैं और शैतान भी, पर मैं दोनो से छुटकारा पा लेता हू।

जव कोई देवता आता है, तो मैं कोई पुरानी प्रार्थना पढने लगता हू और वह उकताकर मेरे पास से चला जाता है।

और जव कोई शैतान आता है, तो कोई पुराना पाप करने लगता हू और वह मेरे पास से गुजर जाता है।

  

यह कैदखाना कोई बुरा कैदखाना नही है। पर मैं अपनी कोठरी और दूसरे कैदी की कोठरी के वीच यह दीवार पसंद नही करता।

तो भी मैं तुम्हे यह विश्वास दिलाता हू कि न मै कैदखाने के पहरेदार के सर बुराई मढना चाहता हू और न कैदखाने के निर्माता के।

  

जो लोग तुम्हे रोटी मागने पर पत्थर देते हैं, हो सकता है कि उनके पास देने के लिए पत्थर ही हो। तो उनकी यह भी दानशीलता ही है।

  

पापाचार कभी-कभी सफल हो जाता है, पर इसका फल घातक ही होता है।

  

वाह ! तुम्हारी उस क्षमाशीलता का क्या कहना है,

जो,

उन घातको को क्षमा कर दे, जिन्होने खून की एक बूंद भी नही गिराई ।

उन चोरो को दड न दे, जिन्होने एक तिनका भी न चुराया।

और उन झूठो को कुछ न कहे, जिन्होने झूठ का एक शब्द भी नही कहा ।

  

जो आदमी भलाई को बुराई से अलग करनेवाली रेखा पर अगुली रख सकता है, निस्सन्देह वही आदमी परमात्मा के चरणो को छू सकता है ।

  

यदि तेरे हृदय मे ज्वालामुखी धधक रही है, तो तुम अपने हाथो मे फूलो के खिलने की आशा कैसे करते हो ?

  

आत्मअनुग्रह का यह भी विचित्र ढग है कि कभी-कभी मैं अपने आपको लोगो के अत्याचार और धोखे का शिकार इसलिए बनाना चाहता हू कि मै उन लोगो की बुद्धि पर हस सकू, जो यह समझते हैं कि मैं अपने साथ होनेवाले अत्याचार और धोखे को नही समझता ।

  

मैं उस खोजी के बारे में क्या कहू, जो स्वय ही परमात्मा का स्वाग भर रहा है ।

अपने कपडे उसको दे दो, जो अपने हाथ उनसे पोछता है। सम्भव है, उसे उनकी फिर आवश्यकता हो जाए, पर तुम्हे तो अब इनकी आवश्यकता होगी ही नही।

◇ ◇ ◇

यह बड़े ही खेद की बात है कि सर्राफ लोग अच्छे माली नही बन सकते।

कृपा करके अपने स्वाभाविक दोषो को अपने प्राप्त गुणों से मत छुपाओ। मैं तो अपने दोषो को भी रखना चाहूगा, क्योकि आखिर वे मेरे अपने ही तो है।

◇ ◇ ◇

बहुत बार मैंने अपने आपको उन अपराधो का दोषी ठहराया है, जो मैंने स्वप्न मे भी नही किए, जिससे मेरे पास बैठनेवाला अपराधी भी मेरी सगति मे अपने को मुझसे हीन न समझे।

◇ ◇ ◇

जीवन के परदे ही उससे भी गहरे रहस्य के परदे हैं।

◇ ◇ ◇

तुम अपने आत्मज्ञान के अनुसार ही दूसरो के गुण-दोषो का निर्णय कर सकते हो।

पर अब मुझे बताओ तो सही कि हममे कौन अपराधी है और कौन निरपराध।

◇ ◇ ◇

वह आदमी वास्तव मे न्यायवान है, जो तुम्हारे अपराधो के लिए अपने आपको आधा अपराधी अनुभव करता है।

◇ ◇ ◇

इन्सानी कानूनो को केवल एक मूर्ख आदमी और एक अपूर्व बुद्धिमान ही तोड सकते हैं। और ये दोनो ही परमात्मा के हृदय के समीपतम हैं।

◇ ◇ ◇

जब कुछ आदमी तुम्हारा पीछा करते हैं, केवल तब ही तुम कुछ तेज चलते हो।

◇ ◇ ◇

हे परमात्मा ! मेरा कोई शत्रु नही है। पर यदि मेरा कोई शत्रु होना हो ही, तो फिर उसकी शक्ति मेरी जितनी ही हो, जिससे केवल सत्य ही जीते।

◇ ◇ ◇

शत्रु से तुम्हारा पूरा मेलजोल तब होगा, जब तुम दोनो मर जाओगे।

◇ ◇ ◇

शायद आदमी आत्मरक्षा के विचार से आत्मघात भी कर ले।

◇ ◇ ◇

प्राचीन काल मे एक महापुरुष था। उसे लोगो ने इसलिए शूली पर चढा दिया कि वह लोगो से अत्यन्त प्रेम करता था और लोग उससे।

पर तुम्हे यह सुनकर आश्चर्य होगा कि अभी हाल मे मैंने उसे तीन बार देखा।

पहली बार मैंने उसे एक सिपाही से प्रार्थना करते देखा कि वह वेश्या को कैदखाने में न ले जाए।

दूसरी वार मैंने उसे एक शरावी के साथ शराव पीते देखा।

और तीसरी वार मैंने उसे गिरजाघर में एक पादरी से मुक्कमभुक्का होते देखा।

◇ ◇ ◇

पाप और पुण्य के वारे मे जो कुछ लोग कहते है, यदि वह सव कुछ सच है, तो फिर मेरा सारा जीवन ही एक लम्वा अपराध है।

◇ ◇ ◇

दया आधा न्याय है।

◇ ◇ ◇

मेरे साथ केवल उस आदमी ने ही अन्याय किया, जिसके भाई के साथ मैंने अन्याय किया था।

◇ ◇ ◇

यदि तुम किसी आदमी को कैदखाने लिए जाते हुए देखो, तो अपने मन मे यह कहो, "कदाचित यह इससे भी अधिक तग और अवेरे कैदखाने से वचना चाहता हो।"

और यदि तुम नशे मे चूर किसी आदमी को देखो, तो अपने मन मे यह कहो, "कदाचित इसने नशे से भी बुरी चीजो से वचने के लिए शराव पी हो।"

◇ ◇ ◇

कई वार आत्मरक्षा के लिए मुझे दूसरो से घृणा करनी पड़ी है। पर यदि मुझमे इससे अधिक शक्ति होती, तो मैं अपने वचाव के लिए यह साधन काम मे न लाता।

◇ ◇ ◇

कितना मूर्ख है वह आदमी जो अपनी आखो को घृणा को अपने होठो की मुस्कराहट से छिपाना चाहता है ।

  

जो मुझसे छोटे हैं, वेही मुझसे ईर्ष्या या घृणा कर सकते हैं ।

पर न तो मेरेसे किसीने ईर्ष्या की है और न घृणा । इससे मालूम होता है कि मैं किसीसे बडा नही हू ।

जो मुझसे बडे हैं, वेही मेरी प्रशसा या तिरस्कार कर सकते हैं ।

पर न तो किसीने मेरी प्रशसा की है और न मेरा तिरस्कार । इससे मालूम होता है कि मै किसीसे छोटा भी नही हू ।

  

तुम्हारा यह कहना, "मै आपकी बात नही समझता" मेरी ऐसी प्रशसा है, जिसका मे अधिकारी नही और ऐसा तिरस्कार है जिसके तुम योग्य नही ।

  

मै कितना अधम हू कि जीवन ने मुझे स्वर्ग दिया और मैं तुम्हे चादी देता हू और फिर भी मैं अपने आपको दानी समझता हू ।

  

जब तुम अपने जीवन की गहराइयो तक पहुच जाओगे, तब तुम्हे मालूम होगा कि न तो तुम पापियो से ऊचे और श्रेष्ठ हो और न अवतारो से नीचे और कम हो ।

  

यह बडे अचम्भे की बात है कि तुम एक मद गतिवाले आदमी से तो सहानुभूति कर लो, एक मद विचारक से नही, एक आंखो के अधे से तो सहानुभूति करते हो, हिये के अधे से नही ।

◇ ◇ ◇

एक लंगड़े आदमी के लिए बुद्धिमानी इसी बात मे है कि अपनी लाठी अपने शत्रु के सिर पर मारकर न तोडे ।

◇ ◇ ◇

वह आदमी कितना अधा है, जो अपनी जेब के रुपयो से तेरा हृदय मोल लेना चाहता है !

◇ ◇ ◇

जीवन एक लम्बी यात्रा है। मद गतिवाले इसे तेज पाकर इसमे से अलग निकल जाते है। और तेज चलनेवाले भी इसे अत्यन्त मद गतिवाला पाकर इसमे से बाहर निकल जाते हैं।

◇ ◇ ◇

यदि पाप नाम की कोई वस्तु है, तो हममे से कुछ तो अपने पुरखाओ का अनुसरण करके पीछे देखते हुए पाप करते हैं।

और कुछ आगे देखते हुए अपनी आनेवाली सतान को अपने अधिकार से दबाकर करते हैं।

◇ ◇ ◇

यथार्थ मे अच्छा आदमी वही है, जो उन सब लोगो से मिलकर रहता है, जो बुरे समझे जाते हैं।

◇ ◇ ◇

हम सब कैदी हैं। भेद केवल इतना ही है कि हममे से कुछ लोग खिडकियोवाली कोठडियो मे बद हैं और कुछ काल कोठडियो में।

◇ ◇ ◇

यह कितने आश्चर्य की बात है कि हम अपने अपराधों की सफाई पर अपने अधिकारो की रक्षा की अपेक्षा अधिक शक्ति लगाते हैं।

◇ ◇ ◇

यदि हम एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापो को स्वीकार कर लें, तो हम एक दूसरे पर हसेंगे कि हम कोई नया पाप नही करते।

और यदि हम सब अपने-अपने पुण्य के कामो को एक दूसरे पर प्रकट करे, तो भी एक दूसरे पर इसी कारण से हसेंगे।

◇ ◇ ◇

एक व्यक्ति समाज के नियमो से ऊचा होता है, जब तक कि वह समाज की परम्पराओ के विरुद्ध कोई काम नही करता।

और उसके बाद न वह किसीसे बडा है न छोटा।

◇ ◇ ◇

राज्य तेरे और मेरे बीच एक समझौता है। और प्रायः आप और मैं दोनो ही गलती पर होते हैं।

◇ ◇ ◇

अपराध क्या है ? या तो वह आवश्यकता का दूसरा नाम

है या किसी बुराई का लक्षण।



इससे बड़ा और क्या अपराध हो सकता है कि हम दूसरो के अपराधो को जानते रहे।



जब कोई दूसरा आदमी तुमपर हसता है, तो तुम उस-पर दया कर सकते हो, पर जब तुम उसपर हसते हो, तो तुम अपने आपको शायद कभी भी क्षमा न करो।

जब कोई दूसरा आदमी तुम्हारे साथ बुराई करता है, तो तुम उस बुराई को भूल सकते हो, पर जब तुम उसके साथ बुराई करते हो, तो तुम उसे सदा याद रखोगे।



सच बात तो यह है कि वह दूसरा आदमी तुम्हारी ही अत्यन्त चेतन आत्मा दूसरे शरीर के रूप मे है।



तुम कितने भूले हुए हो, जब तुम यह चाहते हो कि दूसरे आदमी तुम्हारे पंखो पर उड़ें और तुम उन्हे अपना एक पर भी नही दे सकते।



एक बार एक आदमी मेरे साथ आ बैठा। वह मेरी रोटी खाकर और मेरी शराब पीकर मुझपर हसता हुआ चला गया।

इसके बाद वह फिर रोटी और शराब के लिए मेरे पास

आया और मैंने उसे तिरस्कृत करके चलता किया, तो देवता मुझपर खूब हसे।

◇ ◇ ◇

घृणा तो एक मृत शरीर है। फिर तुममे से कौन उसके लिए कब्र बनना पसन्द करेगा ?

◇ ◇ ◇

जिसकी हत्या की गई है, उसके लिए यह बडे गर्व की बात है कि वह हत्यारा नही है।

◇ ◇ ◇

मानवता का न्यायकर्ता उसके मौन हृदय में है, न कि उसकी बातूनी बुद्धि में।

◇ ◇ ◇

लोग मुझे पागल समझते हैं कि मैं अपने जीवन को इनके चांदी-सोने के कुछ टुकडो के बदले में नही बेचता ।

और मैं इन्हे पागल समझता हू कि ये मेरे जीवन को बिकरी की एक वस्तु समझते हैं।

◇ ◇ ◇

लोग हमारे सामने अपना धन-दौलत फैलाते हैं और हम उनके सामने अपने हृदयो और आत्माओ को।

और फिर भी वे अपने आपको आतिथ्य करनेवाले और हमे अतिथि समझते हैं।

◇ ◇ ◇

मैं उन लोगो मे छोटे से छोटा बनकर रहना पसन्द करूगा जो कल्पनाशील और महत्वाकाक्षी हैं, न कि कल्पना-हीन और आकाक्षारहित लोगो मे बड़े से बडा बनकर।

सबसे अधिक दया का पात्र वह आदमी है, जो अपने स्वप्नो को सोने-चादी का ही रूप देता रहता है।

  

हम सब अपनी हार्दिक इच्छाओ की ऊचाइयो की ओर बढ रहे हैं। यदि तुम्हारा साथी तुम्हारे भोजन का थैला और सूटकेस चुरा ले और तुम्हारा भोजन खाकर वह मोटाताजा हो जाए व सूटकेस के बोझ से दब जाए, तो तुम्हे उसपर तरस खाना चाहिए। इससे उसके भारी शरीर के लिए यात्रा कठिन और बोझ से लम्बी बन जाएगी।

और यदि तुम अपने आपको दुबला-पतला और हल्का-फुलका और अपने साथी को भारी और सास फूला हुआ देखो, तो कुछ दूर उसकी सहायता अवश्य करो, इससे तुम्हारी चाल मे तेजी आएगी।

  

तुम किसी आदमी के बारे मे उसके सबध मे अपने ज्ञान से बढकर कोई मत नही बना सकते। और तुम्हारा ज्ञान है ही कितना?

  

मैं उन विजेताओ की बात सुनने के लिए तैयार नही, जो पराजितो को उपदेश देना चाहते हैं।

  

यथार्थ मे स्वतन्त्र वह आदमी है, जो एक पराधीन व्यक्ति के बोझ को सतोष के साथ स्वयं उठा ले।

  

एक सहस्र वर्ष हुए मुझसे मेरे एक पडोसी ने कहा, "मैं जीवन से घृणा करता हू, क्योकि इसमे दु ख और चिन्ता के सिवा कुछ नही ।"

कल मैं कब्रिस्तान के पास से गुजरा, तो मैंने जीवन को इसी पडोसी की कब्र पर नाचते हुए देखा ।

◇ ◇ ◇

इस ससार का सघर्ष एक ऐसी अव्यवस्था का नाम है, जिसमे व्यवस्था स्थापित करने की इच्छा है ।

◇ ◇ ◇

एकान्त ऐसा मौन तूफान है, जो हमारे जीवन-वृक्ष की सब सूखी टहनियो को तोड डालता है। पर यह हमारी जीवित जड़ो को जीवित भूमि के जीवित हृदय मे अधिक गहराई तक उतार देता है ।

◇ ◇ ◇

एक बार मैंने एक समुद्र से एक नदी का जिकर किया, तो उसने मुझे एक कल्पनाशील अतिशयोक्ति करनेवाला समझा ।

और जब मैंने एक नदी को एक समुद्र की बात सुनाई, तो उसने मुझे एक घटाकर बात करनेवाला समझा, जो किसी की निन्दा कर रहा हो ।

◇ ◇ ◇

उस आदमी का दृष्टिकोण कितना तग है, जो एक झिगुर के सगीत की अपेक्षा एक चीटी की कार्यलीनता की अधिक बडाई करता है ।

◇ ◇ ◇

इस ससार की उच्चतम श्रेष्ठता परलोक मे अत्यन्त छोटी हो सकती है।

  

गहरा आदमी गहराइयो मे और उच्च विचारक ऊचाइयो मे सीधा चला जाता है। पर केवल बड़े हृदयवाले आदमी ही वडे क्षेत्र मे चक्कर लगा सकते हैं।

  

यदि हमे नापतोल का ज्ञान न होता, तो हम एक जुगनू के सामने भी उतने ही आदर से खडे होते, जैसा कि सूरज के सामने।

  

कल्पनाहीन वैज्ञानिक एक ऐसे कसाई के समान है, जिसकी छूरिया और तराजू निकम्मी हो गई हैं।

पर हम क्या करें, क्योकि हम सव शाकाहारी भी तो नही हैं।

  

जव तुम गाते हो, तो एक भूखा आदमी अपने पेट से तुम्हारा गाना सुनेगा।

  

मौत एक नवजात वच्चे की अपेक्षा एक वूढे के अधिक समीप नही है और यही हाल जीवन का है।

  

यदि सचमुच तुम्हे स्पष्टवक्ता वनना ही है, तो स्पष्ट-वक्ता भी गुणपूर्वक वनो। नही तो चुप रहो, क्योकि हमारे

पडोस मे एक आदमी मृत्युशैया पर पडा है ।

◇ ◇ ◇

हो सकता है कि इन्सानो के बीच की मौत देवताओ के बीच एक भोज बन रही हो ।

◇ ◇ ◇

हो सकता है कि एक भूली हुई यथार्थता मर जाय, और वह सत्तर सहस्र वास्तविकताए अपने पीछे इच्छा—वसीयत—मे छोड जाए, जो इसकी अरथी और समाधि के निर्माण मे खर्च की जाए ।

◇ ◇ ◇

वास्तव में हम अपने आपसे ही बातचीत करते हैं, पर कभी-कभी हम जोर से बातचीत करते हैं कि दूसरे भी हमे सुन सकें ।

◇ ◇ ◇

स्पष्ट वस्तु वही है जिसे कोई नही देखता, जब तक कि कोई उसे सरल भाषा मे वर्णन नही करता ।

◇ ◇ ◇

यदि आकाशगगा मेरे अपने ही भीतर न होती, तो मैं उसे कैसे देख या पहचान सकता था ?

◇ ◇ ◇

जब तक मैं वैद्यो में वैद्य न बनू, वे यह विश्वास न करेंगे कि मैं ज्योतिषी भी हू ।

◇ ◇ ◇

शायद मोती सीपी मे समुद्र का दृश्य है, और हीरा कोयले मे समय की व्याख्या है ।

◇ ◇ ◇

ख्याति लालसा की वह परछाईं है जो प्रकाश मे खडी है।

◇ ◇ ◇

जड भी एक फूल ही है जो ख्याति को पसन्द नही करती।

◇ ◇ ◇

सौन्दर्य से अलग न तो धर्म ही कोई वस्तु है और न विज्ञान ही।

◇ ◇ ◇

मैं ऐसे किसी महापुरुप से परिचित नही, जिसके निर्माण मे कोई साधारण वाते शामिल न हो। और ये साधारण बातें ही उनको निष्क्रियता, पागलपन और आत्मघात से रोके रखती है।

◇ ◇ ◇

यथार्थ मे महापुरुप वह आदमी है, जो न दूसरो को अपने अधीन करता है और न स्वय दूसरो के अधीन होता है।

◇ ◇ ◇

मैं यह विश्वास नही करता कि एक वैद्य केवल इसलिए अधकचरा या मध्यम श्रेणी का वैद्य है कि उसके हाथ से पागल भी मरते हैं और महापुरुप भी।

◇ ◇ ◇

सहनशीलता अहकार के रोग के प्रेम मे ग्रस्त है।

◇ ◇ ◇

कीडे-मकोड़े धरती पर चल सकते हैं, पर क्या यह आश्चर्य की वात नही है कि हाथी भी आत्मसमर्पण कर दे ?

◇ ◇ ◇

दो बुद्धिमानो के बीच मतभेद होना शायद अत्यन्त साधारण बात हो सकती है।

◇ ◇ ◇

मैं स्वय ही चिंगारी हूं और मैं ही सूखी घासफूस हूं। इस तरह मेरा ही एक भाग दूसरे भाग को जला रहा है।

◇ ◇ ◇

हम सब पवित्र पर्वत के शिखर पर चढना चाहते हैं। तो फिर यदि हम अतीत को अपना पथ-प्रदर्शक बनाने की बजाय उसे अपना चित्र–नकशा–बनाये तो क्या हमारा मार्ग सरल न बन जाएगा ?

◇ ◇ ◇

बुद्धिमत्ता जब इतनी घमडी बन जाए कि वह रो न सके, इतनी गम्भीर बन जाए कि हस न सके, और इतनी आत्म-केन्द्रित बन जाए कि सिवा अपने किसी दूसरे की चिन्ता भी न करे, तो वह बुद्धिमत्ता बुद्धिमत्ता नही रहती।

◇ ◇ ◇

यदि मैं अपने आपको उन सब बातो से भर लू, जिन्हे तुम जानते हो, तो बताओ कि जिन बातो को तुम नही जानते उन्हे रखने के लिए मेरे पास क्या स्थान रहेगा ?

◇ ◇ ◇

मैंने बातूनियो से मौन, असहनशीलो से सहिष्णुता और निर्दयियो से दया सीखी है। फिर यह कितनी विचित्र बात है कि मैं इन गुरुओ मे से किसीका आभारी नहीं ?

◇ ◇ ◇

एक कट्टर पथी, एक निपट वहरा वक्ता है।

◇ ◇ ◇

ईर्ष्यालुओं का मौन अत्यत शोर करनेवाला होता है।

◇ ◇ ◇

जब तुम जानने योग्य सब बातो को जान चुके होते हो, तब तुम अनुभव करने योग्य बातो के द्वार तक पहुचते हो।

◇ ◇ ◇

अतिशयोक्ति एक ऐसी यथार्थता है, जो अपने आपे से वाहर हो गई है।

◇ ◇ ◇

यदि तुम केवल उन ही बातो को देखते हो, जिन्हे प्रकाश प्रत्यक्ष करता है और जिन्हे वाणी घोषित करती है, तो वास्तव मे न तो तुम देखते हो और न सुनते हो।

◇ ◇ ◇

वास्तविकता एक खुली सच्चाई है।

◇ ◇ ◇

तुम एक ही समय मे हसमुख और निर्दयी दोनो नही बन सकते।

◇ ◇ ◇

मेरे हृदय के सबसे समीप वह राजा है, जिसका राज्य न हो और वह निर्धन है, जो मागना न जानता हो।

◇ ◇ ◇

निर्लज्ज सफलता से एक लज्जापूर्ण असफलता अधिक अच्छी है।

◇ ◇ ◇

तुम जहा से चाहो धरती खोद लो, तुम अवश्य ही खजाना पा लोगे, पर शर्त यह है कि तुममे एक किसान-सा दृढ विश्वास होना चाहिए।

◇ ◇ ◇

बीस घुडसवार शिकारी बीस कुत्तो के साथ एक लोमडी का पीछा कर रहे थे। तब लोमडी ने कहा, "निस्सन्देह थोडी देर में ये मुझे मार डालेंगे। पर ये लोग भी कितने क्षुद्र और मूर्ख हैं! बीस लोमडिया गधो पर चढकर और वीस भेडियो को लेकर एक आदमी को मारने के लिए कभी उसका पीछा करना उचित नही समझेंगी।"

◇ ◇ ◇

हमारे बनाए हुए कानूनो के सामने हमारी बुद्धि झुक सकती है, आत्मा नही।

◇ ◇ ◇

मैं एक यात्री भी हू और माझी भी। हर दिन मैं अपनी आत्मा में नया प्रदेश खोज लेता हू।

◇ ◇ ◇

एक स्त्री ने कहा, "निस्सन्देह यह एक धर्मयुद्ध था। मेरा बेटा तो इसीमें मरा है।"

◇ ◇ ◇

मैंने एक बार जीवन से कहा, "मैं मौत को बोलते हुए सुनना चाहता हू।"

और जीवन ने अपनी आवाज कुछ ऊची करके कहा, "लो, अब तुम मौत की आवाज सुन रहे हो।"

◇ ◇ ◇

जब तुम जीवन की सब समस्याओ को हल कर चुकते हो

और उसके सब रहस्यो को पा लेते हो, तब तुम मौत की इच्छा करते हो, क्योकि यह भी जीवन के रहस्यो का एक दूसरा रहस्य है।

◇ ◇ ◇

जन्म और मौत वीरता की दो कुलीनतम अभिव्यक्तिया हैं।

◇ ◇ ◇

मेरे मित्र! हम दोनो जीवन से अपरिचित रहेंगे, यहा तक कि आपस मे और अपने से भी। पर यह बात उसी दिन तक रहेगी, जब तक मै तुम्हारी आवाज को अपनी ही आवाज समझकर न सुनूगा। और उस समय जब मैं तुम्हारे सामने खडा हूगा, तो यह मालूम होगा कि मानो मैं दर्पण के सामने खड़ा हू।

◇ ◇ ◇

लोग मुझसे कहते है, "यदि तुम अपने आपको पहचान लो, तो सब आदमियो को पहचान लोगे।"

और मैं उनसे कहता हू, "जब तक मै सब आदमियो को न पहचान लू, मै अपने आपको नही जान सकता।"

◇ ◇ ◇

इन्सान का एक नही दो रूप हैं, एक अधकार मे जागता है, और दूसरा प्रकाश मे सोता है।

◇ ◇ ◇

एक सच्चा साधु वह है, जो ससार का इसलिए त्याग कर देता है कि वह ससार का पूर्ण रूप से निर्विघ्न हो आनन्द भोग सके।

◇ ◇ ◇

विद्वान और कवि के सामने एक हरियाला मैदान है।

यदि विद्वान इसे पार कर लेगा, तो वह बुद्धिमान आदमी बन जाएगा।

और यदि कवि इसको तय कर लेगा, तो वह सिद्ध बन जाएगा।

  

कल मैंने दार्शनिको का एक झुड मडी में देखा। वे अपने सिर टोकरो मे ले जा रहे थे और आवाज लगा रहे थे, "बुद्धि लो, बुद्धि।"

आह, बेचारे दार्शनिक! इन्हें भी अपना पेट पालने के लिए अपनी बुद्धि बेचनी पडती है।

एक दार्शनिक ने सड़क के भगी से कहा, "मुझे तुझपर बडा तरस आता है कि तुम्हारा काम बडा कठोर और गदा है।"

भंगी ने कहा, "आपका बहुत-बहुत धन्यवाद! पर यह तो बताने की कृपा कीजिए कि आपका क्या काम है?"

दार्शनिक ने बडे गर्व से उत्तर दिया, "मै इन्सान के मन, कामो और इच्छाओ का अध्ययन करता हू।"

भगी ने झाड़ू देना आरम्भ कर दिया और मुस्कराते हुए कहने लगा, "मुझे भी तुमपर बडा तरस आता है।"

  

सत्य को सुननेवाला सत्य बोलनेवाले से कुछ कम नही है।

  

आवश्यक वस्तुओ और भोग-विलास की वस्तुओ में विवेक करना हर एक के वस की वात नही है। यह काम केवल देवता ही कर सकते हैं, क्योकि वे बुद्धिमान और विचारवान हैं।

और शायद देवता ही आकाश में हमारे श्रेष्ठ विचार हैं।

◇ ◇ ◇

राजाओ का राजा वह है, जिसकी गद्दी साधुओ के हृदय मे होती है।

◇ ◇ ◇

दानशीलता यह है कि अपनी सामर्थ्य से अधिक दो। और स्वाभिमान यह है कि अपनी आवश्यकता से कम लो।

◇ ◇ ◇

वास्तव मे तुम एक वस्तु के लिए किसी एक आदमी के ऋणी नही हो, वरन सब वस्तुओ के लिए सब आदमियो के ऋणी हो।

◇ ◇ ◇

अतीत मे होनेवाले सभी प्राणी आज भी हमारे साथ जीवन बिता रहे हैं।

तो फिर निस्सन्देह हममे से कोई भी अकृपालु मेजबान (अतिथि-सत्कार करनेवाला) बनना न चाहेगा।

◇ ◇ ◇

अधिक इच्छाओवाला दीर्घजीवी होता है।

◇ ◇ ◇

लोग मुझसे कहते हैं, "हाथ मे हो तो एक भी चिड़िया अच्छी है और वृक्ष पर हो तो दस भी कुछ नहीं।"

पर मैं कहता हू, "झाड़ी की एक चिड़िया और उनका

पख हाथ की दस चिडियो से अधिक अच्छे हैं।"

तुम्हारा उस पख को खोजना ही एक ऐसा जीवन है, जिसके गतिशील पाव हैं। नही, नही, जीवन ही यह है।

  

ससार मे केवल दो तत्व है।

एक सौन्दर्य और दूसरा सत्य।

सौन्दर्य प्रेम करनेवालो के हृदय मे है और सत्य किसान की भुजाओ मे।

  

महान सौन्दर्य मुझे अपना गुलाम बना लेता है।

पर उससे भी बडा सौन्दर्य मुझे स्वय अपने बन्धन से भी स्वतन्त्र कर देता है।

  

सौन्दर्य देखनेवाले की आखो की अपेक्षा उसको चाहने-वाले के हृदय मे अधिक चमकता है।

  

मैं उस आदमी की प्रशसा करता हू, जो अपनी बुद्धिमत्ता-पूर्ण बाते मुझे सुनाता है। मैं उस आदमी का आदर करता हू, जो अपनी कल्पनाओ के स्वप्न मेरे सामने खोल देता है। पर मै उस आदमी के सामने झिझक और कुछ-कुछ लज्जा भी अनुभव करता हू, जो मेरी सेवा करता है।

  

प्राचीन काल मे गुणी लोग राजाओ की सेवा करने मे गौरव अनुभव करते थे।

पर आज वे निर्धनों की सेवा करने मे सम्मान का दावा करते हैं ।

◇ ◇ ◇

देवता जानते हैं कि बहुत-से व्यावहारिक श्रादमी मधुर स्वप्नो के ससार मे खोए हुए कल्पनाशील लोगो की गाढी कमाई से रोटी खाते हैं ।

◇ ◇ ◇

बुद्धिमत्ता प्राय एक परदा होता है । यदि तुम इसे फाड सको, तो उसके पीछे या तो तुम एक क्रुद्ध कल्पना-शक्ति पाश्रोगे, या मायाचारपूर्ण चतुराई ।

◇ ◇ ◇

एक समझदार श्रादमी मुझे बुद्धिमान समझता है श्रौर एक मदबुद्धि मुझे मूर्ख समझता है। पर मुझे ऐसा मालूम होता है कि वे दोनो ही ठीक हैं ।

◇ ◇ ◇

केवल वही श्रादमी हमारे हृदयो के रहस्यो को समझ सकते हैं, जिनके श्रपने हृदय रहस्यो से पूर्ण हैं ।

◇ ◇ ◇

जो श्रादमी तुम्हारे सुखो मे शामिल होता है, पर दुखो मे तुम्हारा साथ नहीं देता, वह स्वर्ग के सात द्वारो मे से एक की कुजी खो बैठेगा ।

◇ ◇ ◇

हा, ससार मे निर्वाण है । वह श्रपनी भेडो को हरे-भरे मैदानो में चराने, श्रपने बच्चो को लोरिया देकर सुलाने श्रौर श्रपनी कविता की अंतिम पक्ति लिखने मे है ।

◇ ◇ ◇

हम अपने हर्षो और शोको को उन्हे अनुभव करने से बहुत पहले चुन लेते हैं।

◇ ◇ ◇

शोक दो उद्यानो—सुखो—के बीच एक दीवार है।

◇ ◇ ◇

जब तुम्हारा सुख या दु ख बहुत बढ जाता है, तो ससार तुम्हारी दृष्टि मे तुच्छ बन जाता है।

◇ ◇ ◇

इच्छा आधा जीवन है।
और उदासीनता आधी मौत।

◇ ◇ ◇

हमारे आज के दु खो मे अत्यत कडवी वस्तु हमारे भोगे हुए सुखो की याद है।

लोग मुझसे कहते हैं, "या तो तुम इस ससार के सुखो को चुन लो या परलोक की शाति को।"

और मैं उनसे कहता हू, "मैंने इस ससार के आनन्दो को भी चुना है और परलोक की शाति को भी, क्योकि मैं अपने हृदय मे अनुभव करता हू कि महाकवि परमात्मा ने केवल एक ही कविता लिखी है, जिसकी मात्राए भी पूर्ण हैं और अनुप्रास भी ठीक है।"

◇ ◇ ◇

श्रद्धा हृदय के मरुस्थल में वह हरियाला क्षेत्र है जहा विचार का काफिला नही पहुंच सकता।

◇ ◇ ◇

जब तुम महानता को प्राप्त कर लोगे, तो तुम्हारे मन में एक ही इच्छा रहेगी, तुम एक ही चीज के भूखे होगे और तुम्हें एक ही तृष्णा होगी।



यदि तुम अपने हृदय की गुप्त बातों को हवा पर प्रकट कर दो, फिर यदि हवा उन्हें वृक्षों को बता दे, तो तुम्हें हवा को भला-बुरा न कहना चाहिए।



वसंत के फूल शीत ऋतु के स्वप्न हैं, जिनका वर्णन देवताओं के कलेवे के समय किया जाता है।



एक मांसभक्षी पशु ने कमल से कहा, "देखो, मैं कितना तेज दौड़ता हूं। और एक तुम हो कि न चल सकते हो और न रेंग सकते हो।"

कमल ने उत्तर दिया, "वाह रे बहुत दौड़नेवाले! कृपा करके तेजी से दौड़ो।"



कछुए खरगोशों की अपेक्षा सड़कों को अधिक अच्छी तरह जानते हैं।



यह कितनी विचित्र बात है कि बिना रीढ़ की हड्डीवाले प्राणियों के ही कठोरतम खोल होते हैं!



बहुत अधिक बोलनेवाला बहुत कम समझ रखता है और

एक सुवक्ता और नीलाम की बोली देनेवाले में वहुत ही कम भेद होता है।

◇ ◇ ◇

इस वात के लिए परमात्मा का धन्यवाद करो कि तुम अपने बाप की ख्याति या अपने चचा की सम्पत्ति पर जीवन नही बीता रहे हो।

और इससे भी अधिक धन्यवाद इसलिए करो कि तुम्हारी ख्याति या सम्पत्ति पर जीवन वितानेवाला कोई न होगा।

◇ ◇ ◇

जब एक बाजीगर गेंद को पकडने मे असफल होता है, तभी वह मेरे सामने मागने आता है।

◇ ◇ ◇

ईर्ष्यालु आदमी अनजान रूप से मेरी ही बडाई करता है।

◇ ◇ ◇

बहुत ससय तक तुम अपनी मां की नीद में एक स्वप्न बनकर रहे और जब उसकी आंख खुली तो तुम्हारा जन्म हुआ।

◇ ◇ ◇

जाति की उत्पत्ति का कारण तुम्हारी मां की इच्छा में है।

◇ ◇ ◇

मेरे मा-वाप ने एक बालक की इच्छा की और उन्होंने मुझे जन्म दे दिया। और मैंने अपने लिए मा-बाप को चाहा और मैंने रात और समुद्र को जन्म दे दिया।

हमारे कुछ बच्चे हमारे ठीक काम हैं, पर कुछ बच्चे तो केवल हमारे पछतावे ही हैं।

◇ ◇ ◇

जब रात आए और तुम भी अंधकारमय हो, तो अपने बिछौने पर लेट जाओ और स्वेच्छा से अंधकारमय बन जाओ।

और जब दिन निकले और तुम इसी तरह अन्धकारमय हो, तो उठ बैठो और दृढ संकल्प के साथ दिन से कहो, "मैं अब भी अन्धकारमय हू।"

दिन और रात के साथ खेल खेलना मूर्खता है।

यदि तुम ऐसा करोगे, तो वे दोनों तुमपर हसेंगे।

◇ ◇ ◇

कुहरे से ढका हुआ पर्वत पहाडी नही है। और वर्षा में खडा हुआ बलूत का वृक्ष रोता हुआ बेत का वृक्ष नही है।

◇ ◇ ◇

लो, मैं तुम्हे एक पहेली सुनाता हू। गहरा और ऊंचा एक दूसरे के इस वस्तु की अपेक्षा अधिक समीप है जो कि इन दोनो के बीच मे है।

◇ ◇ ◇

जब मैं एक स्वच्छ दर्पण के रूप मे तुम्हारे सामने खडा हुआ, तो तुम मुझे देर तक देखते रहे और तुमने अपना प्रतिबिम्ब उसमें देखा।

फिर तुमने मुझसे कहा, "मैं तुम से प्रेम करता हू।"

पर वास्तव मे तुमने मुझमे स्वयं अपनेसे ही प्रेम किया।

◇ ◇ ◇

जब तुम्हें अपने पडोसी के प्रेम मे आनन्द आने लगता है, तब वह गुण नहीं रहता।

◇ ◇ ◇

जो प्रेम सदा उमडता नही रहता, वह सदा कम होता रहता है।

  

तुम एक ही समय जवानी और उसके ज्ञान के स्वामी नही बन सकते। क्योकि जवानी को अपने आनन्द-मगल से इतना अवकाश कहा कि वह कुछ जाने।

और ज्ञान अपने आपको खोजने मे ही इतना सलग्न है कि उसे जीवित रहने का ही अवकाश नही है।

  

तुम अपने घर की खिडकी के पास बैठकर नीचे सडक पर जानेवालो को देख सकते हो। सडक पर चलनेवालों मे तुम्हे एक साध्वी दायें हाथ को जाती हुई दिखाई देती है और एक वेश्या बायें हाथ को जाती हुई।

और तुम अपने भोलेपन और सरलता मे अपने हृदय में कह सकते हो, "यह साध्वी कितनी उत्तम और पुण्यवान है और यह वेश्या कितनी अधम और पतित है।"

पर यदि तुम अपनी आखे बन्द कर लो और कुछ देर कान लगाकर सुनो तो तुम्हे आकाश मे यह वाणी गूजती हुई सुनाई देगी, "एक मुझे प्रार्थना से खोजती है और दूसरी दु:ख और कष्ट से बुलाती है और इन दोनो मे से हर एक की आत्मा मे मेरी आत्मा के लिए आश्रय है।"

  

हर सौ वर्ष मे एक बार लेबनान की पहाडियो के बीच बाग मे नासिरियो का ईसा क्रिश्चियनो के ईसा से मिलता है। वे दोनो देर तक आपस मे बातें करते हैं और हर बार

नासिरियो का ईसा क्रिश्चियनो के ईसा से यह कहकर चला जाता है, "मेरे मित्र ! मुझे डर है कि हम दोनो कभी भी आपस में सहमत नही होगे।"

◇ ◇ ◇

हे परमात्मा ! अत्यन्त धन-दौलतवालो की तृष्णा पूरी कर दे !

◇ ◇ ◇

हर महापुरुष के दो हृदय होते हैं, एक दूसरो के दु ख से घायल है और दूसरा क्षमा करता है।

◇ ◇ ◇

जब एक इन्सान ऐसा झूठ बोलता है, जो न तुम्हे हानि पहुचाता है और न किसी दूसरे को, तो तुम अपने मन मे यह क्यो नही कहते कि इसकी वास्तविकताओ का घर इसकी कल्पनाओ के लिए इतना छोटा है कि उसे बडे स्थान के लिए उस घर को छोडना पडा है।

◇ ◇ ◇

हर बन्द द्वार के पीछे एक रहस्य है, जिसपर सात मुहरें लगी हैं।

◇ ◇ ◇

प्रतीक्षा समय के खुर है।

◇ ◇ ◇

तुम्हें क्या चिन्ता है, यदि तुम्हारे घर की पूरबी दीवार मे कष्ट रूपी नई खिडकी है ?

◇ ◇ ◇

जिनके साथ तुम हसे हो, उसे भूल सकते हो, पर जिनके

साथ तुम रोए हो, उसे कभी नही भूल सकते।

◇ ◇ ◇

निस्सदेह नमक मे एक विलक्षण पवित्रता है। इसीलिए वह हमारे आसुओ में भी है और समुद्र मे भी।

◇ ◇ ◇

हमारा परमात्मा अपनी दयापूर्ण तृष्णा मे हम सबको स्वीकार कर लेगा, ओसकण को भी और आसू की बूद को भी।

◇ ◇ ◇

तुम अपनी देवकाय आत्मा के एक अशमात्र हो, तुम्हारा मुह रोटी माग रहा है और अधा हाथ प्यासे होठो से लगाने के लिए प्याला लिए हुए है।

◇ ◇ ◇

यदि तुम अपने जाति, देश और व्यक्तिगत पक्षपातो से जरा ऊचे उठ जाओ, तो निस्संदेह तुम देवता के समान बन जाओ।

◇ ◇ ◇

यदि मैं तुम्हारे स्थान पर हू, तो चढाव के समय मैं समुद्र को भला-बुरा न कहूगा।

जहाज भी अच्छा है और उसका कप्तान भी कुशल है। पर भय और चिन्ता का तूफान तो स्वय तेरे अपने मन मे है।

◇ ◇ ◇

जिसकी हमे इच्छा है और जिसे हम प्राप्त नही कर सकते, वह हमे उसकी अपेक्षा अधिक प्यारी है, जो हमें प्राप्त है।

  

यदि तुम बादल पर बैठ जाओ, तो तुम्हे न तो दो देशों के बीच सीमा दिखेगी और न दो खेतो के बीच सीमा-पत्थर ।

पर खेद तो यही है कि तुम बादल पर बैठ नही सकते।

  

सात शताब्दियां हुईं, एक गहरी घाटी से सात धौले कबूतर उडकर हिमाच्छादित पर्वत-शिखर पर गए। तो जो सात आदमी उनकी उडान देख रहे थे, उनमे से एक ने कहा, "मुझे सातवें कबूतर के पख पर एक काला धब्बा दिखाई देता है।"

आज उसी घाटी मे लोग सात काले कबूतरो की कथा कहते हैं, जो हिमाच्छादित पर्वत-शिखर की ओर उड़कर गए थे।

  

पतझड की ऋतु मे मैंने अपने सारे शोक-संतापो को इकट्ठा करके अपने बाग मे गाड़ दिया। जब अप्रैल महीना आया और वसन्तऋतु पृथ्वी से विवाह करने आई, तो मेरे बाग में उगनेवाले फूल दूसरो के बागो के फूलो से बहुत सुन्दर और भिन्न थे।

मेरे पड़ोसी मेरे फूलो को देखने आए और सबने मुझसे कहा, "अब की बार जब पतझडऋतु मे बीज बोने का समय आए, तो क्या इन फूलो के थोडे-से बीज हमे भी न दोगे ? हम भी उन्हे अपने बागो में बोएगे।"

◇ ◇ ◇

निस्सदेह यहदुर्भाग्य है कि मैं अपना खाली हाथ लोगो की ओर बढाऊ और कोई उसमे कुछ न दे।

पर यह बडी निराशा की बात है कि मैं अपना भरा हुआ हाथ लोगो की ओर बढाऊ और कोई भी लेनेवाला न मिले।

◇ ◇ ◇

मुझे अनन्त मे जाने की तीव्र इच्छा है, क्योकि वहा ही मैं अपनी अनलिखी कविताओ और अचित्रित चित्रो को पाऊगा।

◇ ◇ ◇

प्रकृति और परमात्मा के बीच कला एक सीढी है।

◇ ◇ ◇

धुन्धली कल्पना को मूर्तिमान कर देने का नाम ही कला है।

◇ ◇ ◇

काटो के ताज बनानेवाले हाथ भी आलसी हाथो से अच्छे हैं।

◇ ◇ ◇

हमारे पवित्रतम आसू कभी हमारी आखो की बाट नही देखते।

◇ ◇ ◇

हर इन्सान उस प्रत्येक राजा और दास का वशज है, जो इस ससार मे हुए हैं।

◇ ◇ ◇

यदि ईसामसीह का परदादा उसके अपने भीतर छुपे जीव को जानता तो क्या वह अपने आपसे ही भयभीत न हो जाता ?

  

जितना प्रेम मरियम को अपने बेटे ईसा से था, क्या ज्यूडस* की मा को अपने बेटे से उससे कुछ कम प्रेम था ?

  

हमारे भाई ईसामसीह में नीचे लिखी तीन चमत्कारपूर्ण बातें हैं, जिनका पुस्तको मे उल्लेख नही है—

(१) वह मेरे और तुम्हारे जैसा ही एक आदमी था।

(२) उसमें भी प्रसन्नता की भावना थी।

(३) वह जानता था कि वह विजेता है, यद्यपि वह स्वयं पराजित हो चुका था।

  

हे सूली पर चढाए जानेवाले! तुझे मेरे ही हृदय पर सूली दी गई है और जो कीलें तेरी हथेलियो मे ठोकी गई हैं, वे मेरे हृदय की दीवारो मे चुभ रही हैं।

जब कल कोई अजनबी आदमी यहा से गुजरेगा, तो वह यह नही समझेगा कि यहा दो आदमियो का खून बह रहा है। वह तो एक ही आदमी का खून समझेगा।

  

*ज्यूडस ईसामसीह का एक शिष्य था, जो उससे विश्वासघात करने के कारण बदनाम है।

शायद आपने पवित्र पर्वत का नाम सुना होगा ।

ससार मे वह सबसे ऊचा पर्वत है। यदि तुम उसकी चोटी पर पहुच जाओ, तो तुम्हारे हृदय में केवल एक ही इच्छा रहेगी कि नीचे उतरकर अत्यन्त नीची घाटी मे रहने-वालो के साथ रहू ।

इसीलिए इसको पवित्रतम पर्वत कहते हैं ।

  

जिन विचारो को मैंने इन सूक्तियो में वन्द किया है, उन्हे मुझे अपने कामो के द्वारा स्वतत्र करना चाहिए ।

मान्यताएं

[खलील जिब्रान के कुछ विचार]

१. नश्तर

"वह अपने सिद्धान्तो में पागलपन की हद तक उग्रवादी है।"

"वह भावुक है और जो कुछ लिखता है वह प्रचलित रीति-रिवाजो मे विषमता पैदा कराने के लिए लिखता है।"

"अगर विवाहित और अविवाहित स्त्री-पुरुष विवाह के मामले मे जिब्रान की राय पर चलें तो सामाजिक जीवन की व्यवस्था विगड जाएगी, समाज की नीव टूट जाएगी और यह ससार एक नर्क और इसमे रहनेवाले शैतान वन जाएगे।"

"उसके लेखो के सौंदर्य के धोखे से वचो, क्योकि वह मानवता का शत्रु है।"

"वह आतकवादी, अनीश्वरवादी और धर्महीन है। हम पवित्र लेवनान पर्वत के निवासियो को सीख देते हैं कि वे उसके विश्वासो को ठुकरा दे, उसकी रचनाओं को आग में फूक दें, वरना कही ऐसा न हो कि उसके धर्महीन दृष्टिकोणों का कोई कुप्रभाव हृदयो पर वाकी रह जाए।"

"हमने उसके उपन्यास 'टूटे हुए पर' को पढा और उसे विष मिला पानी पाया।"

  

ऊपर उन विचारो के चद ऐसे नमूने दिए गए हैं जो लोगो ने मेरे बारे मे जाहिर किए हैं। यह सच है कि मैं पागलपन की हद तक उग्रवादी हू, और रचना के मुकाबले मे सहार की तरफ झुकाव रखता हू। मेरा दिल उन बातो से घृणा करता है, जिनका ससार आदर करता है। मैं उन बातो से प्रेम करता हू, जिन्हे ससार ठुकराता है। और अगर आदमी के विश्वास, रीति-रिवाज और उसकी आदतो को उखाड फेंकना मेरे बस मे होता, तो मैं एक क्षण की भी देर न करता। पर कुछ लोगो का यह कहना कि मेरी रचनाए 'विष मिला पानी' हैं, एक ऐसी बात है, जो सच बात को जाहिर तो करती है, पर मोटे परदे के पीछे से। नग्न सत्य तो यह है कि मैं जहर को पानी मे मिलाकर नही, शुद्ध रूप मे प्यालो मे उडेलता हू। हा, इतनी बात जरूर है कि जिन प्यालो मे उडेलता हू, वे हद दर्जे के साफ और पारदर्शक होते हैं।

रहे वे महानुभाव, जो दिल से मेरे लिए यह आपत्ति पेश करते हैं कि वह भावुक है और बादलो की दुनिया मे उडता रहता है। सो, ये वे लोग हैं जो उन पारदर्शक प्यालो की चमक पर अपनी निगाहे जमा देते हैं और उस शराब से आख फेर लेते हैं, जो उन प्यालो मे होती है और जिसे वे 'विष' कहते हैं, क्योकि उनके कमजोर पेट उसे पचा नही सकते।

यह भूमिका एक अक्खड प्रकार की धृष्टता सूचित करती है, परन्तु क्या गुस्ताखी का अक्खडपन मायाचार और धूर्तता की नरमी से अच्छा नही है ? गुस्ताखी स्वय को अपने असली रूप में जाहिर करती है, परन्तु मायाचार मागे वस्त्र पहन कर हमारे सामने आता है।

  

पूर्व के लोग चाहते हैं कि साहित्यकार उस मधुमक्खी के समान हो जाए, जो छत्ता बनाने के लिए बागो मे फूलो का रस इकट्ठी करती फिरती है।

पूर्ववाले मधु पर जान देते हैं और इसके सिवा उन्हे कोई खाना नही भाता। उन्होने इस अधिकता से मधु का इस्तेमाल किया है कि वे स्वय मधु बनकर रह गए हैं, जो आग के सामने पिघल जाता है और उस वक्त तक नही जमता जब तक उसे बर्फ पर न रखा जाए।

पूर्ववाले चाहते हैं कि कवि उनके बादशाहो, राजो-महाराजो, शासको और धर्माचार्यों के सामने अपनी आत्मा को धूप और लोबान की तरह सुलगाए। यद्यपि पूर्वी देशो का वायुमडल दरबारो, बलिवेदियो और समाधियो मे सुलगी हुई धूप और लोबान के सुगन्धित धूए से अट गया है, पर वह अब भी सतुष्ट नही है। यही कारण है कि इस युग मे एक से एक बढकर प्रशसक कवि, शोक-कविता लिखनेवाले और बड़े से बडे सजीले भांड पाए जाते हैं।

पूर्वी देशोवाले चाहते हैं कि विचारक विद्वान् प्राचीन कवियो की कविताए दुहराते रहे और अपने लेखो मे मूर्खो-

वाले उपदेश, निरर्थक बातें और उन वाक्यो और व्यवस्थाओ की सीमा से आगे न बढें, जिनपर चलकर आदमी का जीवन उस क्षुद्र घासफूस के समान हो जाता है, जो छाया मे उगे हो, और उसकी अन्तरात्मा उस कुनकुने पानी के समान हो जाती है, जिसमे थोडी-सी अफीम मिली रहती है।

कहने का सार यह है कि पूर्वी देशोवाले बीते हुए युग के पवित्र स्थानो मे जीवन बिताते हैं, और झूठी तसल्लिया देनेवाली और हसी पैदा करनेवाली लज्जापूर्ण बातो से दिलचस्पी रखते हैं, पर उन त्यागपूर्ण और निश्चित सिद्धान्तो से दूर भागते है, जो डक मारते हैं और उन्हे झूठे सुख-चैन की गहरी नीद से जगा देते हैं।

  

पूर्वी देश बीमार हैं। उन्हे सदा लगी रहनेवाली बीमारियो और लगातार दवाओ ने इतना ग्रस रखा है कि वे बीमारी का अभ्यस्त और तकलीफ से परिचित होकर अपने दु ख-दर्द को स्वाभाविक गुण ही नही, बल्कि एक ऐसा सुन्दर और अच्छा स्वभाव समझने लगे हैं, जो स्वस्थ शरीर और महान् आत्मा के लिए खास तौर से नियत है। इन आदमियो की निगाह मे वे सब आदमी त्रुटिपूर्ण और प्रकृति के वरदानो और बडे-बडे चमत्कारो से खाली हैं जो उन बीमारियो और तकलीफो से बचे हुए है।

पूर्वी देशो मे बहुत-से हकीम हैं, जो उनकी नाडी देखते हैं और उनके रोग के विषय मे आपस मे सलाह-मशविरा

करते हैं, लेकिन जब इलाज की नौबत आती है, तो नही तेज
और नशा लानेवाली औषधिया देते
बढा देती हैं, पर उसे जड से दूर नही
इन सन्न करनेवाली

घटे गुजरने नही पाते कि पुरुष के रिश्तेदार उसकी पत्नी के सम्बन्धियो के पास जाते हैं, कुछ देर तक चिकनी-चुपडी बातें होती रहती हैं और इसके बाद सब इस बात पर सहमत हो जाते हैं कि पति-पत्नी में मेल करा दिया जाए । इसलिए ये आदमी स्त्री के पास आते हैं और सच्ची-झूठी सीखो से उसके भावों को लुभाते हैं, जो उसे लज्जित तो कर देती हैं, पर सतुष्ट नही कर सकती । इसके बाद पति को बुलाया जाता है और उसपर उन अच्छी-अच्छी बातो और ऊचे-ऊचे उदाहरणो की बौछार शुरू कर दी जाती है, जो उसके विचारो में नरमी तो पैदा कर देती हैं, लेकिन उन्हे बदल नही सकती । इस तरह जो पति-पत्नी मन से एक दूसरे को घृणा करते हैं, उनमें मेलजोल का पवित्र कर्तव्य पूरा कर दिया जाता है । अब वह पति-पत्नी अपनी इच्छा के विरुद्ध फिर एक जगह रहना शुरू कर देते हैं, यहा तक कि मुलम्मा उतर जाता है और उस सुन्न कर देनेवाली औषधि का असर खतम हो जाता है, जो सगे-सम्बन्धियो और उनके प्यारे आदमियो ने इस्तेमाल की थी, इसलिए पुरुष फिर अपनी घृणा और अप्रसन्नता जाहिर करने लगता है और स्त्री फिर अपने दुर्भाग्य का परदा फाड देना चाहती है । पर जिन लोगो ने पहले मेल-मिलाप कराया था, दुबारा वेही लोग यह महान् कर्तव्य पूरा करते हैं । जो मर्द-औरत सुन्न करनेवाली दवाई की एक बूद पी लेते हैं, वे भरे-भरे गिलास पीने से भी इन्कार नही करते ।

जनता अत्याचारी राज्य या पुरानी व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करती है और सुधार-सभा की नीव रखकर उन्नति और

आजादी की तरफ कदम वढाती है, गरमागरम व्याख्यान दिए जाते हैं, वेधडक लेख लिखे जाते हैं, वजट वनाए जाते हैं और योजनाए प्रकाशित होती हैं। शिष्टमडल और प्रतिनिधि भेजे जाते है, पर एक या दो सप्ताह से ज्यादा नही गुजरने पाते कि हम सुनते हैं कि सरकार ने सभा के नेता को पकड लिया या उसका वजीफा अर्थात् मासिक वृत्ति नियत कर दी। इसके बाद सुधार-सभा के वारे में कुछ सुनने मे नही आता, क्योकि इसके सदस्य सुन्न करनेवाली ओषधि की चद बूदें पीकर, फिर शाति और आज्ञापालन की तरफ दौड जाते हैं।

जनता अपने वुनियादी सिद्धान्तो को दृष्टि मे रखकर अपने धर्मगुरु के विरुद्ध आवाज उठाती है, उसके व्यक्तित्व को अपनी समालोचना का निशाना वनाती है, उसके कामो पर नुकताचीनी करती है, उसके चाल-चलन को वुरा-भला कहती है और उसे एक ऐसे नए धर्म को स्वीकार कर लेने के डरावे देती है, जो वुद्धि मे आने योग्य और अधविश्वासो तथा दोषो से दूर होगा। पर अधिक समय नही गुजरता कि सुनने मे आता है कि देश के बुद्धिमान लोगो ने धर्मगुरु और उसके अनुयायियो का आपसी विरोध दूर कर दिया है, और जादू के समान असर तथा सुन्न करनेवाली ओषधियो के प्रभाव से गुरु का व्यक्तित्व वही आतक व तेजपूर्ण दीखने लगता और अनुयायियो के दिलो में वे ही आज्ञा-पालन के अधे भाव फिर पैदा हो जाते हैं।

यदि कमजोर और पीडित आदमी वलवान् अत्याचारी आदमी के अत्याचार की शिकायत करता है, तो पडोसी कहते हैं, "चुप रहो,

दावा करने से जरूर रुकता, पर वह कोई गुण नही है, बल्कि एक विचित्र और अनोखी वास्तविकता है, जो एकान्तवासी आदमियो पर असावधानी और बेखबरी की अवस्था मे जाहिर होकर उनके आगे-आगे चलती है। और वे इन गुप्त तारो मे बधे और भयकर उद्देश्यो पर निगाहे जमाए उसके साथ-साथ हो लेते हैं।

मेरे विचार मे व्यक्तिगत सच बातो को प्रकट करने में लज्जा अनुभव करना मुलम्मा चढी हुई मक्कारी और मायाचार है। इसे ढोग भी कह सकते हैं, पर पूर्वी देशो के लोग इसे 'सभ्यता' के प्यारे नाम से पुकारते हैं।

  

कल जब हमारे विचारशील साहित्यकार मेरे इन विचारो को पढेंगे, तो घृणा और अप्रसन्नता के स्वर मे कहेगे

"वह उग्रवादी है, जो जीवन के बुरे पहलू को देखता है और बुराई के सिवा उसे कुछ नजर नही आता। यही कारण है कि वह लगातार हमपर रो रहा है और बराबर हमारी दशा पर रो रहा है।"

मैं उन विचारशील साहित्यकारो के सामने निवेदन करता हू, "मैं पूर्वी देशो पर रोता हू क्योकि मुरदे की लाश के सामने नाचना ऊचे दरजे का पागलपन है।

"मैं पूर्वी देशो पर शोक करता हू, क्योकि बीमारियो पर हसना निरी मूर्खता है। मैं उस प्यारे देश की शोक-कविता पढता हू, क्योकि अधी मुसीबत के सामने गाना कोरा अज्ञान है।

"मैं उग्रवादी हू, क्योकि जो कोई वास्तविकता को प्रकट

करने मे नरमी से काम लेता है, वह उसके आधे हिस्से का वर्णन करता है और अन्तिम आधा कहनेवाले के उस भय मे छुपा रह जाता है जो उसे लोगो के सदेहो और अनुमानो से होता है।

"मैं सड़ी हुई लाश देखता हू, तो मेरा दिल इस कदर घृणा करता है और मेरी आत्मा इतनी बेचैन हो जाती है कि मैं उसके पास नही बैठ सकता, फिर चाहे मेरे दायें हाथ में अमृत का प्याला हो और बाये हाथ मे मिठाई की तश्तरी। इस आधार पर अगर कोई मेरे रुदन को हसी से, मेरी घृणा को प्रेम से और मेरी उग्रता को नरमी से बदलना चाहता है, तो मुझे पूर्वी लोगो मे कोई ऐसा न्यायप्रिय शासक दिखाए, जो धर्म का पाबन्द हो और सही राह पर चलता हो, मुझे किसी ऐसे धर्माचार्य का पता दे, जिसके ज्ञान और आचरण मे समानता हो और मुझे कोई ऐसा पति बताये, जो अपनी पत्नी को भी ऊची आख से देखता हो, जिस आख से वह अपने आपको देखता है।

"अगर कोई यह चाहता है कि मुझे नाचता देखे या ढोल और बासुरी बजाते सुने, तो उसे चाहिए कि मुझे विवाह के उत्सव पर बुलाए न कि कब्रिस्तान मे खडा कर दे।"

२. प्रकृति की गोद में

भाग्य ने मुझे आजकल की तग सभ्यता की दु खपूर्ण धारा मे बहाकर शीतल और हरेभरे कुज मे बैठी प्रकृति की गोद से उठाकर जनसमूह के पाव तले बुरी तरह पटक दिया। यहा मैं शहरी जीवन के कष्टो के एक दु खी शिकार की तरह गिर पडा।

इससे बडा और कोई दड ईश्वर की सन्तान को नही भुगतना पडा है। इससे बडा देश-निकला उस आदमी के भाग्य मे भी नही लिखा गया है, जो भूमि पर पैदा होनेवाले घास के एक तिनके को इतने जोश से प्यार करता है, जो कि उसकी रग-रग को फडका देता है। किसी अपराधी को दी जानेवाली कैद भी मेरी कैद के कष्ट की बराबरी नही कर सकती, क्योकि मेरी कोठरी की तग दीवारें मेरे हृदय को काट रही हैं।

धन-दौलत मे हम शहरी लोग गाववालो से अधिक धनी भले ही हो सकते हैं, पर सच्चे जीवन की पूर्णता मे वे हम से बहुत ज्यादा धनी है। हम बोते बहुत हैं, पर काटते कुछ

नही, पर वे उस समृद्धि का सुख भोगते हैं, जो कि प्रकृति ने ईश्वर की परिश्रमी सन्तान को पुरस्कार मे दी है। हम हर एक लेनदेन का मक्कारी और धूर्तता से हिसाब लगाते हैं, पर वे प्रकृति की पैदावार को ईमानदारी और शाति से लेते हैं। हम उचाट नीद मे सोते हैं और अगले दिन के चिन्तारूपी भूत को देखते रहते हैं। पर वे इस तरह सोते है, जैसे बच्चा अपनी मा की गोद में निश्चिन्त सोता है, क्योकि वे जानते हैं कि प्रकृति अपनी नित्य की पैदावार उन्हे देने से इन्कार न करेगी।

हम लोभ के गुलाम हैं, वे सतोष के मालिक हैं। हम जीवन के प्याले से कटुता, निराशा, भय और थकावट पीते हैं, पर वे ईश्वर के आशीर्वादो का शुद्ध अमृत पीते हैं।

सौन्दर्य और शोभा प्रदान करनेवाले परमात्मा ! आप मेरे लिए जनसमह की इमारतो मे मूर्तियो और चित्रो में छुपे हो। मेरी कैदी आत्मा की दु खभरी आवाजें सुनो ! मेरे फटते हुए हृदय की पुकारें सुनो ! मुझपर दया करो। रास्ता भूले हुए अपने बच्चे को पर्वत के आचल मे ले चलो, वही मेरा मन्दिर है।

३. त्योहार की सन्ध्या

सन्ध्या हो गई और अधेरा समस्त नगर पर छा गया: महलो, झोपडियो और दुकानो मे दीपक जगमगा उठे। जन-समूह त्योहार के सुन्दर-सुन्दर और नए-नए वस्त्र पहनकर सडको पर निकल पडा। उनके चेहरो पर उस आनद, हर्ष और सतोष के सभी चिह्न थे, जो खुशी के त्योहारो पर होना चाहिए।

पर मैं इस सारी भीड और चीख-पुकार से परे हटकर दूर अकेला उस महापुरुष के व्यक्तित्व के बारे मे सोचने लगा, जिसकी महानता की याद मे यह त्योहार मनाया जा रहा था। मैं युगो पहले हुए उस प्रतिभाशाली महापुरुष के सम्बन्ध मे सोच-विचार कर रहा था, जो दरिद्रता मे पैदा हुआ, जिसने धर्माचरणयुक्त जीवन व्यतीत किया और जो अन्त मे सूली पर चढा दिया गया।

मैं उस जलती हुई मशाल के सम्बन्ध मे सोच रहा था, जो शाम देश के इस एक छोटे-से गाव में उस परमात्मा ने प्रकाशित की, जो त्रिकालव्यापी है और जो अपने सत्य से एक

सस्कृति और सभ्यता से दूसरी सस्कृति और सभ्यता को पार करता रहता है।

सार्वजनिक बाग मे पहुचकर, मै लकडी के एक साधारण बेंच पर बैठ गया। फिर मै पुष्प-पत्रहीन वृक्षो में से भीड भरी सडको को देखने लगा। मै उन गीतो और प्रार्थनाओ को सुनने लगा, जो स्त्री-पुरुष खुशी मे गा रहे थे।

घटे भर अपने विचारो मे डूबा रहकर मैने मुडकर देखा तो अपने पास एक बूढे आदमी को बैठा देखकर चकित हो गया। उसके हाथ मे एक टहनी थी, जिससे वह धरती पर सीधी-टेढी लकीरें खीच रहा था। उसके आने और मेरे पास बैठने का मुझे कुछ भी पता न चला था। मैने अपने मन मे कहा, यह भी मेरे ही समान अकेला है। उसके चहरे को बडे ध्यान से देखने के बाद मुझे ऐसा मालूम हुआ कि फटे-पुराने कपडो और लम्बी-लम्बी जटाओ के होते हुए भी वह कोई ऐसा प्रतिष्ठित और आदरणीय पुरुष है, जिसकी उपेक्षा नही की जा सकती। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि उसने मेरे मन के भावो को समझ लिया है, क्योकि उसने गहरे और शात स्वर मे मेरा अभिवादन किया।

मैने भी बडे आदर से उत्तर मे उसका अभिवादन किया। इसके बाद वह फिर धरती पर लकीरें खीचने लगा। उसका विचित्र और सुखदायक स्वर मेरे कानो मे गूज रहा था। मैने फिर उससे पूछा, " क्या आप इस शहर मे अजनबी और अपरिचित हैं ?"

उसने उत्तर दिया, "हा, मै इस शहर मे ही क्या प्रत्येक शहर मे अजनबी हू।"

मैंने उसको ढारस बधाते हुए कहा, "एक अजनबी आदमी को यह भूल जाना चाहिए कि इन आनन्द के दिनों में वह एक अपरिचित है, क्योकि इन दिनो मे मनुष्यो के हृदयो मे सहानुभूति और उदारता के भाव पैदा हो जाते हैं।" उदासीनता के भावो के साथ उसने कहा, "मैं और दिनो की अपेक्षा ऐसे दिनो मे अपने आपको अधिक अजनबी पाता हू।" यह बात कहकर उसने निर्मल आकाश की तरफ देखा। उसकी दृष्टि तारो से पार चली गई और उसके होठ हिलने लगे, मानो वह आकाश मे अपने दूरस्थ देश की प्रतिमूर्ति देख रहा है।

उसके विचित्र उत्तर ने मेरे मन मे उत्सुकता पैदा कर दी। मैंने कहा, "वर्ष के ऐसे अवसरो पर मनुष्य दूसरो के प्रति अधिक दयालु होते हैं। धनवान निर्धनो का ध्यान रखते हैं। और बलवान दुर्बलो पर करुणा भाव रखते हैं।"

उसने कहा, "हा, पर धनवान की निर्धन पर क्षणिक दया कठोर होती है और बलवान की दुर्बल के प्रति सहानुभूति अपनी बडाई के प्रदर्शन के सिवा और कुछ भी नही है।"

मैंने उसकी हा में हा मिलाते हुए कहा, "आप सच कहते हैं, पर दुर्बल और निर्धन आदमी को क्या पडी कि वह यह जानने का प्रयत्न करे कि धनवानो के हृदयो में क्या भावना होती है और न भूखा यह सोचता है कि जो रोटी वह खा रहा है, उस-

का आटा किस तरह गूंधा जाता है और रोटी कैसे पकाई जाती है।"

उसने उत्तर दिया, "यह ठीक है कि लेनेवाला ये बातें नही सोचता; पर जो देता है, उसकी तो यह जिम्मेवारी है कि वह अपने आपको इस बात से सावधान रखे कि जो कुछ वह दे रहा है, वह अपनी मान-बडाई के लिए नही दे रहा है, वरन भ्रातृप्रेम और जनता की सहायता के लिए दे रहा है।"

मुझे उसकी बुद्धि पर आश्चर्य हुआ और मैं फिर उसकी वृद्ध आकृति और फटे-पुराने कपडो के सम्बन्ध मे सोचने लगा। मैंने कुछ चेतन होकर कहा, "मालूम होता है कि आपको सहायता की आवश्यकता है। इसलिए क्या आप मुझसे रुपया-दो रुपए लेना स्वीकार करेंगे ?" दु खपूर्ण मद मुस्कान के साथ उसने कहा, "हा, मुझे आवश्यकता तो अवश्य है, पर रुपये-पैसे की नही।"

चकित होकर मैंने पूछा, "तो फिर आपको क्या चाहिए ?"

उसने उत्तर दिया, "मुझे कोई ठिकाना चाहिए। मै ऐसा स्थान चाहता हूं, जहा मै शान्ति से विश्राम कर सकूं।"

मैंने जोर देकर कहा, "तो लीजिए यह दो रुपए। किसी सराय में जाकर विश्राम कर लेना।"

दु ख के साथ उसने कहा, "मैंने हर एक सराय मे कोशिश कर ली, पर सब व्यर्थ। मैंने हर एक घर का द्वार खटखटाया, पर किसीने ठिकाना न दिया। मैं प्रत्येक भोजनालय मे गया, पर किसीने रोटी न दी। मुझे चोट पहुची है, मैं भूखा नही हूं। मैं

थका नही, निराश हू । मुझे विश्राम के लिए घर नही चाहिए, मानव-हृदय मे स्थान चाहिए ।"

मैंने अपने मन मे कहा, यह कितना विचित्र मनुष्य है ! कभी तो यह एक दार्शनिक के समान बातें करता है और कभी एक पागल जैसी । ज्योही मेरे मन मे ऐसे विचार पैदा हुए, उसने मेरी तरफ घूरकर देखा और दु खभरी आवाज मे कहने लगा, "हा ! मैं पागल हू। पर एक पागल भी बिना किसी ठिकाने अपने को अजनबी और बिना भोजन के अपने को भूखा अनुभव करेगा, क्योकि मनुष्य का हृदय प्रेम, दया और करुणा के भावो से खाली है ।"

मैंने क्षमा मागते हुए उससे कहा, "मुझे अपने अज्ञानपूर्ण विचारो के लिए खेद है । क्या आप मेरा आतिथ्य स्वीकार करेंगे और मेरे घर मे विश्राम करेंगे ?"

उसने कठोरता से कहा, "मैंने हजार बार तुम्हारा द्वार और दूसरो के द्वार खटखटाए पर किसीने सुनावाही न की ।"

अब मुझे विश्वास हो गया कि वह सचमुच पागल है । फिर भी मैंने कहा, "खैर, अब तो आप मेरे घर चले ।"

उसने धीरे से अपना सिर उठाते हुए कहा, "यदि तुम यह जानते कि मैं कौन हू, तो मुझे कभी निमत्रण न देते ।"

डरते हुए मैंने धीरे से पूछा, "आप कौन हैं ?"

समुद्र की गडगडाहट के समान मर्मभेदी स्वर में उसने गरज-कर कहा, "मैं वह क्राति हू, जो कि जातियो की नाश की हुई चीजो को फिर से निर्माण करती है ! मैं वह तूफान हू, जो युगो

के पैदा किए हुए वृक्षो को जड से उखाड फेकता है। मैं वह हू, जो धरती पर शाति स्थापना के लिए नही वरन युद्ध फैलाने के लिए आया है, क्योकि इन्सान को दु ख और कष्ट मे ही सतोष होता है।"

यह कहते हुए आसू उसके कपोलो पर से बह पडे। फिर वह तनकर खडा हो गया और उसके आसपास ज्योति-सी फैल गई। उसने अपने हाथ आगे को फैला दिए और मैंने उसकी हथेलियो पर कीलो के निशान देखे। मैं मुस्कराता हुआ उसके चरणो मे साष्टाग लेट गया और चिल्लाकर कहा, "प्रभु ईसामसीह !"

बडी मानसिक वेदना के साथ उसने कहा, "जनता मेरे सम्मान में मेरे नाम पर उत्सव मना रही है। वह उन रिवाजो को पाल रही है, जो युगो ने मेरे नाम के इर्दगिर्द कायम कर दिए हैं। पर मैं अजनबी हू और इस ससार मे पूर्व से पश्चिम तक मारा-मारा फिरता हू, फिर भी कोई मेरे असली रूप को नही पहचानता। लोमडियो के लिए भट हैं और आकाश मे उडनेवाले पक्षियो के लिए उनके घोसले हैं, पर आदम की सतान को अपना सिर छुपाने के लिए कोई जगह नही।"

उसी क्षण मैंने अपनी आखें खोली और सिर उठाकर जो अपने आसपास देखा, तो मुझे अपने सामने धूए के बादलो के सिवा कुछ दिखाई न दिया और न अनतता की गहराइयो से निकलती हुई रात की खामोशियो की साय-साय की आवाज के अतिरिक्त और कुछ सुनाई दिया। मैंने अपने आपको सम्भाला

और दूरस्थ लोगो के गीत सुने। उस समय मेरी अन्तरात्मा ने कहा, "जो शक्ति हृदय को चोट से बचाती है, वही शक्ति हृदय को बडप्पन की खुशी से फूलकर कुप्पा होने से रोकती है। वाणी का गीत मधुर है, पर हृदय का गीत स्वर्ग का पवित्र स्वर है।"

४. जातियों के सिद्धान्त

जाति उन भिन्न-भिन्न आचरण, विश्वास और मतवाले व्यक्तियो का समुदाय है, जिन्हे एक वास्तविक सम्बन्ध आपस मे मिलाता है। यह वास्तविक सम्बन्ध आचरण से अधिक दृढ, विश्वास से अधिक गहरा और मत से ज्यादा मान्य है।

कभी धर्म की एकता इस सम्बन्ध का एक तार होती है, पर यह तार इतना पक्का नही होता कि दूसरे जातीय सम्बन्धों को शिथिल और ढीला कर दे। हा, यदि वह सम्बन्ध ही ऐसे गले हुए और दुर्बल हो तो दूसरी बात है, जैसे कि कुछ पूर्वी देशो में हैं।

कभी भाषा की एकता इस सम्बन्ध का मूल कारण होती है। पर बहुत-सी जातिया हैं, जो एक भाषा बोलती हैं, पर राज-नीति, राजशासन और सामूहिक दृष्टिकोण आदि में उनमे स्थायी विरोध होता है।

कभी खून की एकता इस सम्बन्ध की नीव होती है, पर इतिहास मे ऐसे अनगिनत उदाहरण मौजूद हैं, जिनसे हम यह प्रमाणित कर सकते हैं कि भिन्न-भिन्न वश की जातिया एक

दूसरे से अलग हुईं और यह अलगाव आपसी शत्रुता, लडाई-झगडो और अन्त मे अवनति और नाश का कारण वन गया।

और कभी लौकिक भलाई की इच्छा वह आधार होती है, जिसपर यह सम्बन्ध खडा किया जाता है। पर वहुत-से समुदाय हैं, जिनकी लौकिक भलाई की युक्ति सिवा स्वार्थों और युद्धो के कुछ नही होती ।

अच्छा ! तो फिर यह जातीय सम्वन्ध क्या है ? और वह कौन-सी धरती है, जहा जातियो की मूर्तिया बनती हैं ?

जातीय सम्बन्ध के बारे मे मेरा एक मत है, जिसे कुछ विचारक इसलिए विचित्र समझते हैं कि इसके सिद्धान्त और परिणाम अनुभव में आनेवाली बातो से तालमेल नही खाते ।

फिर भी मेरा यह मत है—

हर उपजाति का एक सामूहिक गुण होता है जो अपने तत्व और रुचि की दृष्टि से व्यक्ति के गुण से समानता रखता है। यह सामूहिक गुण अपने अस्तित्व के लिए जातियो के व्यक्तियो की इस तरह आवश्यकता रखता है, जैसे वृक्ष को अपने जीवन के लिए पानी, मिट्टी, प्रकाश और गरमी की आवश्यकता है। फिर भी वह उपजातियो से अलग अपना एक स्थायी अस्तित्व रखता है और इसका एक विशेष जीवन और एक अलग विचार होता है। परन्तु जिस प्रकार मेरे लिए उस युग का निश्चित करना कठिन है जिसमें व्यक्ति का गुण पैदा होता है, उसी तरह मेरे लिए उस युग का निश्चित करना भी कठिन है, जिसमे सामूहिक गुण पैदा होता है। फिर भी मैं यह ज़रूर

जानता हू, उदाहरण के लिए, मिस्री कौम नील नदी के किनारे पर आरम्भिक राज की नीव रखे जाने से कम से कम पाच सौ वर्ष पहले प्रकट हुई और इसी सामूहिक गुण से मिस्र ने अपने कला-सम्बन्धी, धार्मिक और सामूहिक विकासो में सहायता ली।

जो कुछ मैंने मिस्र के सम्बन्ध में कहा, वही अशूर, ईरान, रोम और अरब आदि की नई जातियो पर भी लागू होता है। नवीन जातियो से मेरा अभिप्राय उन जातियो से है, जो मध्य-काल के बाद अस्तित्व मे आईं।

मैंने कहा है और ठीक कहा है कि सामूहिक गुण एक विशेष जीवन होता है। जिस प्रकार हर जीवित प्राणी की एक सीमित आयु होती है, उसी प्रकार सामूहिक गुण के लिए भी एक समय होता है, जिससे वह बढ नही सकता। जिस तरह व्यक्तिगत अस्तित्व बचपन से जवानी, जवानी से अधेडपन और अधेडपन से बुढापे की अवस्था मे जाता है, इसी तरह सामूहिक गुण का अस्तित्व भी नीद के परदे से घबराए हुए प्रभात के जागरण से, सूरज की किरणो से प्रकाशमान दुपहर के जागरण से, व्याकुलता के वस्त्र पहने सायकाल की व्याकुलता से, नीद के बोझ से दबी हुई रात के जागरण से, गहरी नीद की गहराइयो की तरफ जाता है।

यूनानी जाति ईसामसीह के जन्म से एक हजार वर्ष पहले जागी और मसीह से पाच सौ वर्ष पहले महानता और उन्नति को प्राप्त हुई। पर जब मसीह का युग आया, तो जाग्रति के स्वप्नो से उकता गई और अनन्त के स्वप्नो से गले मिलने

के लिए अनतता के विस्तार मे सो गई।

अरबी जाति इस्लाम धर्म के प्रकट होने से तीन सौ वर्ष पहले अस्तित्व मे आई और दूसरे युग मे उसे अपने व्यक्तिगत अस्तित्व की अनुभूति हुई, यहा तक कि जब इस्लाम के पैगम्बर पैदा हुए, तो अरबी जाति एक देव की तरह खड़ी हुई और आधी की तरह उस प्रत्येक वस्तु को नष्ट कर दिया, जो उसके रास्ते मे रुकावट बनकर खडी हुई। और जब खलीफाओ का युग आया, तो वह एक ऐसी गद्दी पर बैठ गई, जिसका एक पाया हिन्दुस्तान में था तो दूसरा इन्दलस मे। पर जब उसकी उन्नति का सूर्य डूबने को आया और मुगल जाति पैदा होकर पूर्व से पश्चिम तक फैल गई, तो अरबी जाति अपने जागरण से तग आकर सो गई। पर उसकी नीद गहरी नीद नही, हलकी और उचटती हुई नीद है। इसलिए मैं विश्वास के साथ कहता हू कि वह दुबारा ठीक इसी प्रकार जागेगी और उन सब शक्तियो का प्रदर्शन करेगी, जो उसके अतरग मे छुपी रह गई हैं, जैसे रोमन जाति इटली के जागरण-काल मे (Renaissance) आन्दोलन के युग मे दुबारा जाग्रत हुई और वीनस, फ्लोरेंस और मीलान नगरो मे उन बातो तथा कार्यों को पूरा किया, जिनको उसने तूतीनी जाति के आक्रमण से पहले प्रारम्भ कर दिया था।

इतिहास मे जितनी जातिया मिलती हैं, उन सबसे अधिक विचित्र जाति फ्रासीसियो की है, जिसको अस्तित्व मे आए दो हजार वर्ष हो गए, पर वह अभी तक जवानी के चित्ताकर्षक युग मे है। इस जाति मे आज भी विचारो की कोमलता, दृष्टि मे

तेजी, और विद्याओं और कलाओ की विस्तीर्णता पाई जाती है, जो इसके इतिहास के प्रत्येक युग मे इसकी परिपूर्णता की पूजी रही है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि इन विशेष गुणो मे इस जाति ने खूब उन्नति की है और बरावर कर रही है।

ह्यूगो, रेना, रासद और सेमूनी और इनके अतिरिक्त उन्नीसवी शताब्दी के तमाम फ्रासीसी महापुरुष कला, ज्ञान और विचार की दृष्टि से संसार के हर महापुरुष के समान श्रेष्ठता रखते हैं।

हमे एक और बात यहा प्रमाणित करनी है कि कुछ जातियो की आयु दूसरी जातियो की आयु की अपेक्षा अधिक लम्बी होती है। मिस्री जाति तीन हजार वर्ष तक जिन्दा रही, पर यूनानी जाति एक हजार वर्ष से ज्यादा जिन्दा न रह सकी। जातियो की आयु के कम या ज्यादा होने के कारण भी वेही हैं, जो व्यक्तियो की आयु के कम या ज्यादा होने के हैं।

पर जीवन के रगमच पर अपना अभिनय पूरा कर लेने के वाद जाति पर क्या बीतती है ?

क्या वह आनेवाली संतानो के लिए अपनी याद के सिवा कुछ और छोडे विना मर जाती है ? क्या वह जमाने के हाथो इस प्रकार नष्ट हो जाती है कि मानो वह कभी थी ही नही ?

मेरा विश्वास है कि किसी जाति का वास्तविक अस्तित्व वदल सकता है, पर नष्ट कभी नही होता। वह जड पदार्थों के अस्तित्व की तरह एक रूप से दूसरा रूप धारण कर लेता है, पर उसके प्राकृतिक अणु जमाने के साथ वाकी रहते हैं। इसी प्रकार किसी जाति का सामूहिक गुण सोता तो अवश्य

है, पर फूलो के समान धरती मे अपने बीज डालकर। रही इसकी आत्मा, सो वह अनन्त लोक की तरफ ऊचे उठती है। और मेरी राय मे जाति हो या फूल, इसकी आत्मा—सुगध—ही अकेला यथार्थ तत्व है, स्थायी गुण है। इसलिए शेव, बाबल, एथेन्स और बगदाद की आत्मा हमारी भूमि के गिर्द तने हुए ईथर के परदे मे अब तक मौजूद है, बल्कि वह हमारी आत्माओ की गहराइयो मे मौजूद है और हम व्यक्तिगत और सामूहिक अपेक्षा से उस हर एक जाति की बपौती हैं, जो इस धरतीतल पर प्रकट हो चुकी है। पर यह पवित्र बपौती उस समय तक व्यक्तिगत या सामूहिक कोई प्रत्यक्ष रूप धारण नही कर सकती, जब तक कोई ऐसी जाति अस्तित्व मे न आए, जो तमाम व्यक्तियो और सब वर्गों को अपने भीतर सभाले और इस तरह एक सर्वव्यापी गुण ऐसा सामूहिक रूप धारण कर ले, जिसका विशेष जीवन और अलग उद्देश्य हो।